अप्रैल 2006
Rs. 13 /-
चन्दामामा

NOW AVAILABLE AT ALL LEADING BOOK SHOPS

Hiya! What has hit the animal world?

Listen hard and look keenly.

Do you hear the jingle of the jungle?

Each book priced Rs.35/- only

A set of five story books
with the whackiest and most interesting
collection of animal stories ever written —
for Rs.175/- only

FOR FURTHER ENQUIRIES CONTACT :
CHANDAMAMA INDIA LTD., 82, DEFENCE OFFICERS COLONY,
CHENNAI - 600 097.

NOW AVAILABLE AT YOUR NEAREST NEWS STAND FOR RS.15 PER COPY

A TREASURE-TROVE FOR TALENTED TOTS

PAGE AFTER PAGE WILL KINDLE THE IMAGINATION OF THE CHILD

FOR ANNUAL SUBSCRIPTION PAY ONLY RS. 150

AND SAVE RS. 30

Mail the form below along with the remittance to : SUBSCRIPTION DIVISION, Chandamama India Limited, 82 Defence Officers' Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097.

SUBSCRIPTION FORM

I wish to be a subscriber of Junior Chandamama.

Name____

Age________Class__________School__________________________

Home Address______________________________________

____

_________________________________PIN______________

I am enclosing D/D No___________on______________________Bank/

M.O. receipt No__________issued by__________________P.O. for Rs.150. Please start supply from____________________ (month).

Date________________ Signature

चन्दामामा

सम्पुट-५७ अप्रैल २००६ संचिका - ४

अंतरंग

विशेष आकर्षण

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of Chandmama India Ltd. to

Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal,
Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये।
भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १५० रुपये।
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा 'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन

एक सिक्के के दो पहलू के समान हमेशा अच्छा और बुरा दोनों होते हैं जो हमारे बिचारों को प्रतिबिम्बित और हमारी क्रियाओं को प्रभावित करते हैं। क्या अच्छा है, क्या बुरा है, इसकी परिभाषा करना कठिन है। इस बिन्दु पर लोगों में अक्सर बाद बिबाद चलता रहता है।

उदाहरण के लिए मानव-मूल्यों को ले लीजिये। जो उपयोगी या लाभप्रद या स्वार्थ रहित है, सामान्यतः व्यापक रूप से उसे अच्छा माना जाता है और जिससे लोगों को हानि पहुँचती है या उनकी भावनाओं को चोट लगती है या साधारणतः जीवन को खतरा होता है, उसे बुरा या अनिष्ट माना जाता है। अब प्रश्न है कि कैसे हम ऐसे मूल्यों को ग्रहण करें जो हरेक के लिए अपने जीवन में अच्छा माना जाता हो। यह निस्सन्देह इस बात पर निर्भर करेगा कि आप का मन और शरीर मूल्यों को आत्मसात करने के लिए कितना स्वस्थ है।

कोई शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत हो सकता है। फिर भी, यदि बह अपनी शक्ति का उपयोग बृहत मानव समाज के लिए नहीं कर सकता और बह केवल आत्मकेन्द्रित रहने में बिश्वास करता है और अपने लिए अधिक से अधिक शक्ति संचय में लगा रहता है, ऐसे व्यक्ति की तुलना हमारे धर्म ग्रन्थों में दानव से की गई है। यदि कोई व्यक्ति साफ-सुथरी आदतें अपनाता है, अनुशासित रहता है और पवित्र विचारों को एकत्र करता है केवल तभी वह समाज का उपयोगी सदस्य बन सकता है।

दिनांक ७ अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाते समय हमें यह स्मरण रखना चाहिये कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निवास रहने पर एक पूर्ण मनुष्य बनता है।

सम्पादक : विश्वम

पाठकों के पत्र

सभी बाल पत्रिकाओं में से मुझे सबसे अधिक आकर्षित करनेवाली पत्रिका है, ''चन्दामामा।'' यह पाठकों के सामने एक विचित्र व अद्भुत लोक को प्रस्तुत करती है। अनसुनी, अनदेखी विचित्र विशेषताओं से भरी ''चन्दामामा'' पत्रिका सचमुच ही पाठकों के लिए एक अद्भुत वरदान है। लगभग पचीस सालों से मैं ''चन्दामामा'' का पाठक हूँ। थोड़े से समय के लिए यह प्रकाशित नहीं हुई, पर पुनः यह अपने प्रकाश को विकीर्ण कर रही है और इसे निश्चित रूप से पाठकों का भाग्य कहा जाना चाहिये। मेरी हृदयपूर्वक आकांक्षा है कि नवीन ''चन्दामामा'' पत्रिका जगत का सिरमौर बने।

-जि. जॉन केनडी, हैदराबाद

भारतीय साहित्य के आकाश में ध्रुव नक्षत्र है ''चन्दामामा'', जिसकी अपनी विलक्षणताएँ व विशिष्टताएँ हैं, जिसे पढ़कर पाठक इसकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते। एक पाठक होने के नाते प्रेरित होकर मैं यह लिख रहा हूँ। वेताल कथाएँ नित्य नूतन हैं। लोकप्रिय धारावाहिक उत्कंठा तथा उत्तेजना उत्पन्न करते हैं तो विविध देशों की लोक कथाएँ ज्ञान व मनोविकास प्रदान करती हैं। जातक कथाएँ व पौराणिक धारावाहिक अनूठे हैं। मैं चाहता हूँ कि आप भविष्य में पंचतंत्र कथाएँ व अरेबिया कहानियाँ भी प्रकाशित करते रहें। आपसे मेरी विनती है कि आगे भी लोकप्रिय तथा पौराणिक धारावाहिकाओं में आप कथा के उन्नत स्तरों को चालू रखें।

- महर्षि, इलाहाबाद

अपने बचपन में मैं 'चन्दामामा'' पाठ्यपुस्तकों के अंदर छिपा कर रखकर बड़े चाव से पढ़ता रहता था। बड़ा हो जाने के बाद ''चन्दामामा'' की धारावाहिक वेताल कथाएँ, जातक कथाएँ तथा अन्य दिलचस्प पठन सामग्री की जिल्दसाजी करवायी और अपने पुस्तकालय में सुरक्षित रखा। बचपन में पढ़ी 'आधे आने का राजा', 'जागते रहो' कहानियाँ अब भी मुझे बहुत पसंद हैं। यह तो नहीं जानता कि आकाश में चमकते चन्दामामा में सूत कातती हुई बुढ़िया है या खरगोश है, पर इतना तो अवश्य बता सकता हूँ कि यह ''चन्दामामा'' पत्रिका मेरी दृष्टि में बड़ी ही महत्वपूर्ण पत्रिका है। इस उम्र में भी इसे पढ़ते हुए आनंद पाता हूँ। हर महीने इसे पढ़ने की उत्कंठा बनी रहती है। इसे पढ़ने से हृदय को शांति मिलती है। मासिक पत्रिका ''चन्दामामा'' घर भर के लोगों को ज्ञान और विनोद प्रदान करती है।

- दुर्गा, वर्धा

''चन्दामामा'' के प्रकाशकों और पाठकों को साठवें वर्ष की पूर्ति पर मेरे अभिनंदन। पाठकों के लिए कहानियों की जो प्रतियोगिता चलायी जाती है, इसमें अक़्सर पूछा जाता है कि आप किस दर्जे में पढ़ रहे हैं? आपकी उम्र क्या है? क्या उम्र में बड़े पाठक नहीं हैं? भारत भर में जो पत्रिका सब का मन मोह लेती है, वह पत्रिका सबकी है।

- वासुदेव भट्ट, कारवार

उपाय काम आया

महेश एक गाँव का ग्रामाधिकारी था। नंद नामक एक नौकर उसके यहाँ काम करता था। वह अपने मालिक का विश्वासपात्र नौकर था। कचहरी के अन्य कामों के साथ-साथ घर का काम-काज भी करता था। यों वह महेश की पत्नी पार्वती का भी प्रेमपात्र बना। पार्वती उससे अक्सर कहा करती थी, ''तुम्हारी वजह से मुझे आराम मिल रहा है। कभी अवसर आया तो अवश्य तुम्हारी सहायता करूँगी। अपना काम समझकर तुम्हारी भलाई करूँगी। ज़रूरत पड़ने पर मालिक से भी तुम्हारी सहायता करवाऊँगी।''

ज़मींदार के दिवान के कोषागार में दो कर्मचारियों की जगह खाली हुई। महेश समर्थ ग्रामाधिकारी था, इसलिए ज़मींदार ने उससे कहा कि इन दो नौकरियों में से एक के लिए वह किसी कुशल व्यक्ति की सिफारिश करे।

नंद को जैसे ही यह मालूम हुआ, उसने पार्वती से कहा, ''मेरा बेटा, थोड़ा पढ़ा-लिखा है। मालिक से कृपया बताइये कि वह मेरे बेटे की सिफारिश करें और दिवान में उसे नौकरी दिलायें।''

पार्वती ने उसके बेटे को नौकरी दिलाने का आश्वासन दिया। उस दिन शाम को नंद ग्राम कचहरी से महेश के साथ आया और घरेलू कामों को पूरा किया। घर जाते हुए उसे कुछ याद आने पर फिर ग्रामाधिकारी के घर आया।

उस समय घर के दरवाज़े लगभग बंद थे। उस समय पार्वती उसके बेटे के बारे में अपने पति से कुछ बता रही थी तो नंद दरवाज़े के पास ही रुककर सुनने लगा। पार्वती पति से बोली कि नंद को हम पर ही भरोसा है, इसलिए दिवान की नौकरी उसके बेटे को अवश्य दिलाना।

महेश हँसता हुआ कह रहा था, ''देखो, तुम बडी नादान हो, नंद के बेटे को नौकरी दिलवाऊँगा तो वह यह नौकरी छोड़ देगा और अपने बेटे के

साथ रहने लगेगा। यह नौकरी नहीं दिलवाऊँगा तो बाद वह अपने बेटे को भी इसी नौकरी में लगायेगा। हमें अच्छे व विश्वासपात्र नौकर की ज़रूरत हो तो आगे से कभी भी उसके बेटे को नौकरी दिलाने की बात मत करना।''

''आपने ठीक कहा। कितनी बुद्धू हूँ। मैंने तो यह सोचा ही नहीं था।'' पार्वती ने कहा।

इन बातों को सुनकर नंद निश्चेष्ट रह गया। चुपचाप घर चला गया।

उसी दिन नंद का साला उसके घर आया। उसकी एक सयानी बेटी थी। वह अपनी बेटी की शादी नंद के बेटे से कराना चाहता था। नंद ने खाना खा लिया और किसी से बात किये बिना कमरे के अंदर चला गया। उसकी पत्नी और साला भी उसके पीछे-पीछे कमरे के अंदर गये।

साले ने नंद से पूछा, ''क्या बात है बहनोईजी, आप परेशान लग रहे हैं।''

नंद ने जो सुना, पूरा बताया और कहा, ''मेरा बेटा मेरे बाद नौकर बनकर काम करे, इसका मुझे फ़िक्र नहीं। परंतु जो विश्वास को गुलामी समझते हैं, उनके यहाँ काम करने की मुझे इच्छा नहीं होती। इसी का मुझे फ़िक्र है।''

नंद के साले ने स्थिति को बखूबी समझा और कहा, ''बहनोईजी, आप के मालिक आपके मूल्य को समझें, आपके बेटे को दिवान में काम दिलायें, इसका मैंने एक उपाय सोचा है।''

नंद ने वह उपाय जानना चाहा तो उसके साले ने बताया, ''आप ग्रामाधिकारी से बता दीजिये कि नौकरी छोड़ रहा हूँ। दिवान में न सही, आपकी जगह पर आपके बेटे को ग्राम नौकर नियुक्त करने की सिफ़ारिश करने के लिए ग्रामाधिकारी से बताइये। बाद में क्या करना है, मुझ पर छोड़ दीजिये।''

''क्या यह संभव होगा?'' कहते हुए नंद ने उसकी सलाह मान ली।

दूसरे दिन नंद यथावत् ग्रामाधिकारी के घर गया। पार्वती समझ रही थी कि नंद यह नहीं जानता कि उसके और उसके पति के बीच में क्या बातें हुईं। उसने नंद से कहा, ''कल रात को तुम्हारे बारे में उनसे बात की। वे कह रहे थे कि एक महीने के अंदर दिवान में नौकरी के लिए दो में से किसी एक को चुनना है। ऐसे तो दो नौकरों के लिए जगह खाली है पर, तुम्हारे मालिक एक

की ही जगह के लिए सिफारिश कर सकते हैं। तुम्हारे बेटे से भी अधिक लायक़ उम्मीदवार हैं। तुम्हारे मालिक के सामने प्रश्न यह है कि किसकी सिफारिश की जाए। तुम बूढ़े होते जा रहे हो, इसलिए अपने बेटे को नौकरी दिलवाना चाहते हो और बुढ़ापे में आराम करना चाहते हो। तुम्हारा ऐसा सोचना स्वाभाविक भी है। परंतु किसी कारण से यह नौकरी तुम्हारे बेटे को नहीं मिली तो वंश परंपरा के हक़ के रूप में तुम्हारे बेटे को तुम्हारी नौकरी अवश्य मिलेगी। हो भी सकता है, उसे दिवान में नौकरी मिल जाए। इस बीच, मैं तुम्हारे बेटे को नौकरी देने के विषय में उनसे बात भी करूँगी। लेकिन अपनी जगह पर अपने बेटे को नौकरी में लगवाने के विषय में संकोच मत करना।''

नंद ने विनयपूर्वक कहा, ''मालकिन, आप तो जानती हैं, मेरे छोटे भाई की पत्नी बहुत पहले मर गयी, इसलिए उसके बेटे का पालन-पोषण मैं ही करता आ रहा हूँ। मेरे बेटे का नाम जय है तो उसका नाम विजय है। मेरे बाद, मेरी नौकरी उनमें से आप किसी को देना चाहती हों तो एक महीने तक, उन दोनों को आपके यहाँ रखूँगा। मेरे बेटे को दिवान में नौकरी मिल जाए तो ठीक है। अगर ऐसा संभव नहीं हुआ तो उसकी जगह पर विजय की सिफारिश कीजिये।''

पार्वती ने मान तो लिया, और पति के लौटते ही उसने उससे यह विषय बताया। ग्रामाधिकारी थोड़ी देर तक सोच में पड़ गया। फिर कहा, ''नंद
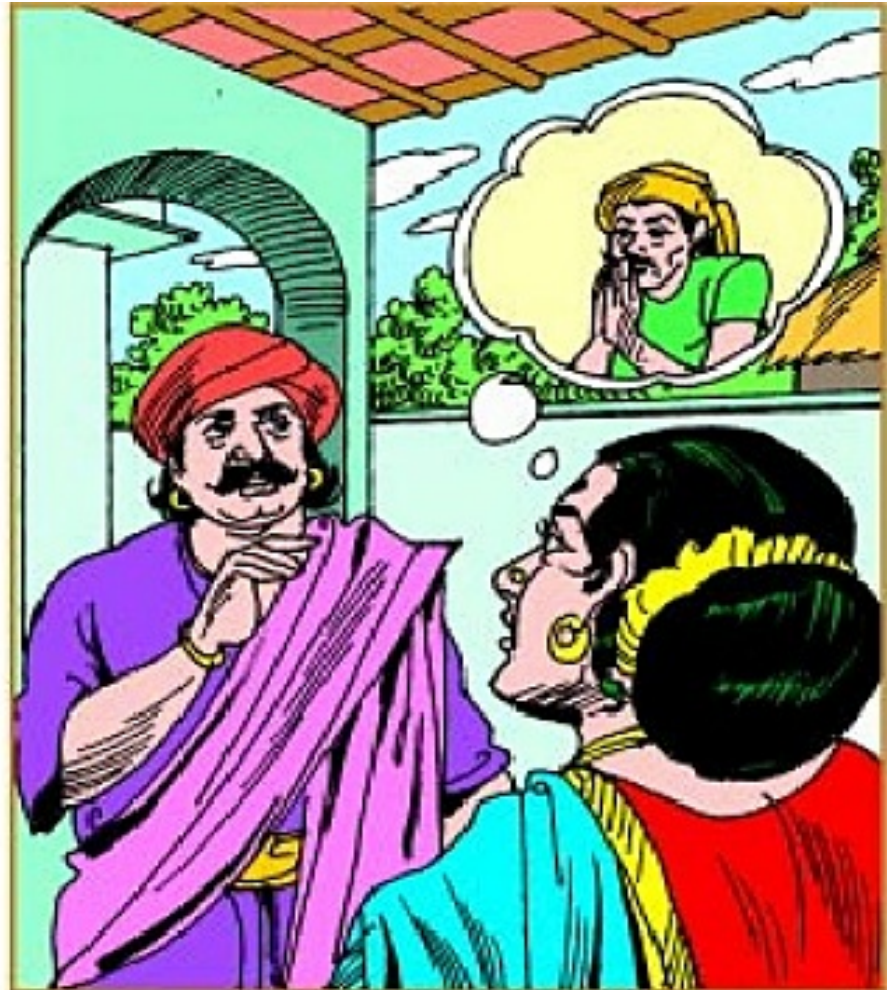
की इच्छा सही लगती है। जय और विजय दोनों को तात्कालिक रूप से पड़ोसी गाँव के ग्रामाधिकारी सावंत के पास भेजूँगा। कुछ समय बाद उस ग्रामाधिकारी से राय लूँगा कि इन दोनों में से कौन ग्राम नौकर के लिए लायक़ है और कौन दिवान की नौकरी के लिए।''

पार्वती के द्वारा नंद ने जान लिया कि ग्रामाधिकारी की सोच क्या है। उसने यह विषय अपने साले से बताया और कहा, ''तुम कह रहे थे कि जय को दिवान में नौकरी मिल सकती है, और इसके लिए एक उपाय भी है। देखना, यह उपाय कहाँ तक फलीभूत हो सकता है।''

साले ने जय और विजय को बुलवाया और उनसे बताया भी कि तुम दोनों को पड़ोसी ग्रामाधिकारी के यहाँ एक महीने तक काम करना

होगा। फिर विजय से कहा, ''तुम्हारे चाचा ने तुम्हें शिक्षित बनाने की भरसक कोशिश की। परंतु तुमने कोई अभिरुचि नहीं दिखायी। उसे लेकर अब चिंतित होने की कोई ज़रूरत नहीं। जय थोड़ा-बहुत पढ़ा-लिखा है। कैसे भी हो, जी लेगा। उसे अपना दामाद भी बनाना चाहता हूँ। इसलिए उसे मेरी तरफ़ से पूरी सहायता मिलेगी। चाचाजी की इच्छा पूरी होनी हो तो तुम्हें ग्रामाधिकारी के यहाँ नम्रतापूर्वक काम करना होगा और अच्छा नाम कमाना होगा।'' फिर उसने जय से कहा,''तुम उस ग्रामाधिकारी से साफ़-साफ़ बता देना कि नौकरी में लग जाने के बाद घरेलू काम किसी भी हालत में नहीं करूँगा और नौकरी से संबंधित काम ही करूँगा।''

ग्रामाधिकारी महेश ने जय, विजय को पास ही के ग्रामाधिकारी सावंत के यहाँ भेजा और वे दोनों वहाँ काम पर लग गये। जय ने सावंत से बताया भी कि वे उसे नौकरी से संबंधित कामों पर ही लगायें । विजय पेशे से संबधित काम करता रहा, साथ ही घरेलू काम भी।

एक महीने के बाद ग्रामाधिकारी सावंत, महेश से मिला और कहा, ''तुम्हारा ग्राम नौकर नंद का बेटा जय, अपने पिता के बाद ग्राम नौकर बना तो घरेलू कामों के लिए किसी और को तुम्हें रखना होगा। वह बड़ा ही शरारती है। विजय विनयी है और चुस्त भी।'' उसने यों अपनी राय दी।

महेश ने सोच-विचार के बाद नंद को बुलवाया और कहा, ''मालूम हो गया है कि तुम्हारे भाई का बेटा विजय ही सच्चे अर्थों में तुम्हारा वारिस है। वह नम्र स्वभाव का है, जो काम सौंपे जाते हैं, उन्हें वह श्रद्धापूर्वक करता है। तुम्हारा बेटा पढ़ा-लिखा है, इसलिए अच्छा यही होगा कि वह दिवान में काम करे। यह राय ग्रामाधिकारी सावंत ने व्यक्त की। आज ही ज़मींदार को, तुम्हारे बेटे को नौकरी पर रखने की सिफारिश करता हूँ।''

यह सुनकर नंद बेहद खुश हुआ। घर जाने के बाद साले से कहा, ''बड़े ही चालाक निकले, तुम्हारा उपाय काम आ गया'' कहते हुए उसने उसके दोनों हाथ पकड़ लिये।
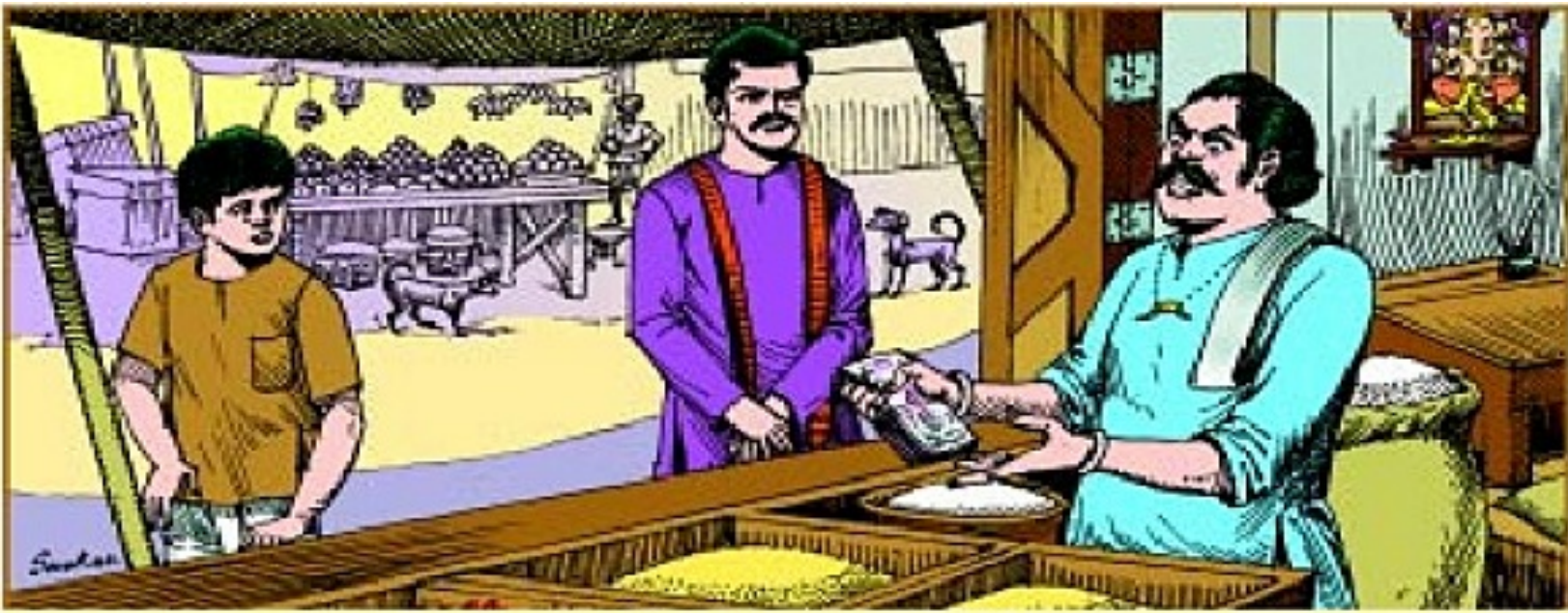
संदेही प्राणी

परंधाम किराने की दुकान चलाता था। हर किसी को वह संदेह की दृष्टि से देखता था। उसका समझना था कि मुझसे बड़ा अक्लमंद कोई है ही नहीं। अपने यहाँ काम करनेवाले गुमाश्तों का बारंबार अपमान किया करता था।

एक दिन घर के लिए आवश्यक चीज़ें खरीदने उसका दोस्त गुरुनाथ उस दुकान पर आया। परंधाम ने उससे कहा कि उसे एक अक्लमंद गुमाश्ते की ज़रूरत है और हो सके तो वह इसका इंतजाम करे। गुरुनाथ की गली के नुक्कड में रंगा नामक एक लड़का रहता था। अगली बार वह अपने साथ उस लड़के को भी ले आया।

परंधाम ने रंगा से पूछा, ''तुम हिसाब बखूबी जानते हो?'' रंगा ने सिर हिलाते हुए 'हाँ' कहा।

परंधाम बग़ल के कमरे में गया और रुपयों का एक पुलिंदा ले आया। फिर रंगा से कहा, ''इस पुलिंदे में पाँच हज़ार रुपये हैं। गिनना और बताना कि इसमें इतने रुपये हैं या नहीं। बगल के कमरे में जाना और इन्हें गिनकर ले आना।''

जैसे ही रंगा कमरे में गया, परंधाम ने गुरुनाथ से कहा, ''आजकल किसी का भी विश्वास नहीं किया जा सकता। इस लड़के को पाँच हज़ार रुपयों का पुलिंदा दिया। उसमें पचास रुपये के नोट हैं, उनमें पचास का एक नोट ज़्यादा रख दिया। वह उस पचास के नोट को जेब में रख लेगा और कहेगा कि ठीक पाँच हज़ार रुपये हैं। पता लग जायेगा कि वह कैसा लड़का है।'' कहते हुए वह हँसने लगा। इतने में रंगा वहाँ आया और रुपयों का पुलिंदा उसके सुपुर्द किया। उसने रंगा से पूछा, ''पूरी रक़म है न?'' उसने कहा, ''नहीं, पचास रुपये का एक नोट कम है।''

''देखा, तुमने ठीक तरह से गिना नहीं होगा। तुम्हें हिसाब नहीं आता। देखना, फिर से एक और बार गिनेंगे।'' फिर गुरुनाथ से कहा,

अभिषेक

"गुरुनाथ, इस पुलिंदे में कितनी रक़म है, ज़रा गिनना।" कहते हुए उसने वह पुलिंदा गुरुनाथ के सुपुर्द किया। गुरुनाथ ने नोटों को गिनने के बाद कहा, "इसमें निनानबे ही हैं।"

"यह तो सरासर झूठ है, धोखा है। मैंने एक सौ एक नोट दिये तो दो नोटों को ग़ायब कर दिया और कहते हो, निनानबे ही हैं?" वह नाराज़ हो उठा और रंगा का कुर्ता पकड़ लिया। उसकी जेबें ढूँढ़ डालीं। कमरे में जाकर ढूँढ़ा, लेकिन कहीं रुपये नहीं मिले। तब गुरुनाथ ने, परंधाम से कहा, "तुमने ग़लत गिना होगा। बेकार ही इस लड़के पर संदेह कर रहे हो। ठीक है, किसी और को नौकरी पर रख लेना।" कहते हुए वह बाहर आया।

गली में थोड़ी दूर मुडने के बाद रंगा ने गुरुनाथ से कहा, "मालिक, सच कहा जाए तो पुलिंदे में एक सौ एक नोट हैं। सब कहा करते हैं कि परंधाम किसी का विश्वास नहीं करता। संदेही प्राणी है। मेरी परीक्षा लेने के लिए उसने ऐसा किया होगा। जब यह बात वह आपसे कह रहा था, तब मैंने सुन भी लिया। इसलिए उसके साथ एक और नोट भी निकाला और छिपा दिया। जो हर क्षण संदेह करता रहता है, उसके पास काम करना नहीं चाहिये। यह मुझे बिलकुल पसंद नहीं। भीख माँगकर जीना उससे कहीं अच्छा है। ये रुपये लीजिये और उसे दे दीजिये।" कहते हुए उसने अपनी धोती में से पचास के दो नोट निकाले और गुरुनाथ के हाथ में रख दिया।

गुरुनाथ ने रंगा की तारीफ़ की और वह रक़म परंधाम को दे दी। उसने परंधाम से कहा, "परंधाम, गली भर के सब लोगों को मालूम है कि तुम किसी का एतबार नहीं करते। रंगा ने साबित कर दिया कि ऐसा स्वभाव बिलकुल अच्छा नहीं है। उससे तुम्हारी हानि होती है। सोचोगे तो जान जाओगे।" कहकर वह वहाँ से लौट पड़ा।

इस घटना से परंधाम में परिवर्तन आया। उस दिन से वह किसी गुमाश्ते का अपमान नहीं करता। उन्हें संदेह की दृष्टि से नहीं देखता। अब वह अच्छा आदमी कहलाया जाने लगा।
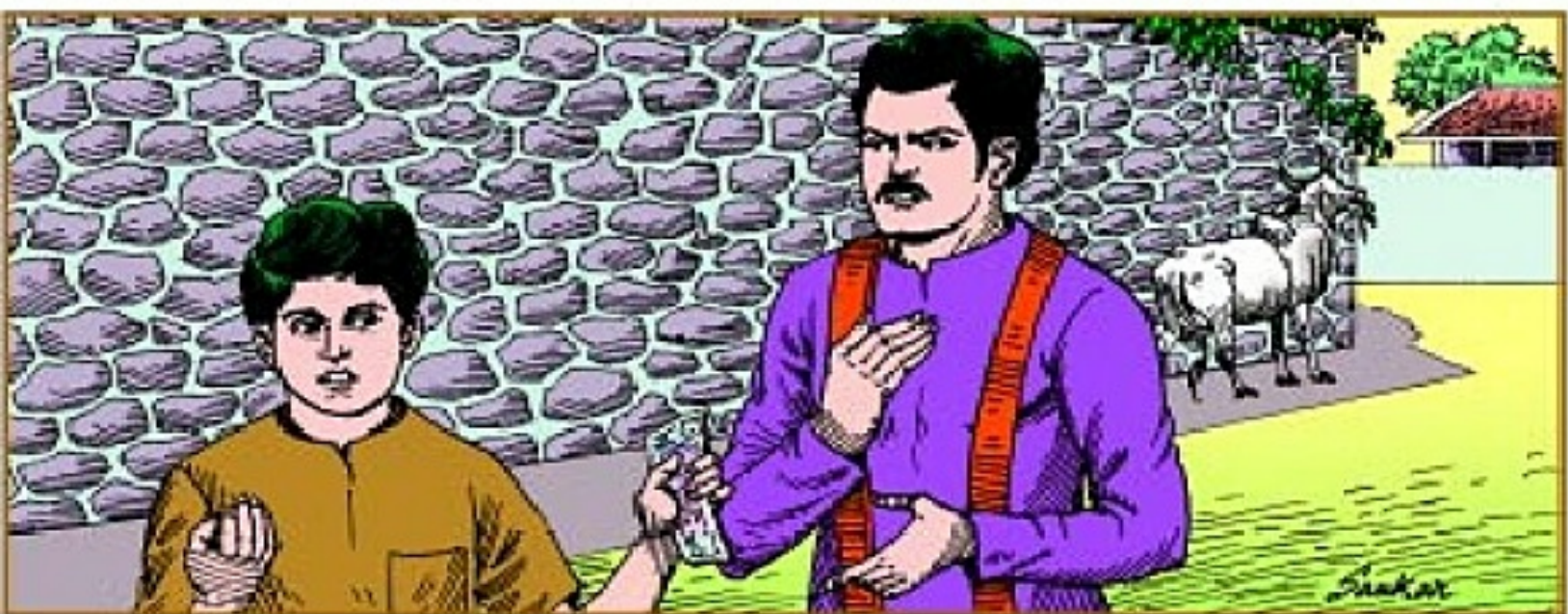
भयंकर घाटी

8

(कालभैरव की मूर्ति के सामने ब्राह्मदण्डी ने जो हवन किया था, उसका धुँआ सारी गुफ़ा में छा गया। इस प्रकार उसके रहने की जगह के बारे में, राजा द्वारा भेजे गये सैनिकों को मालूम हो गया। राजगुरु ने, जो मन्त्रशास्त्र जानता था, कालभैरव का मुख बन्द कर दिया। मान्त्रिक ने केशव और जयमल्ल को कहीं भाग जाने के लिए कहा।)

ब्रह्मापुर के सैनिकों में से एक ने, जो पहाड़ पर चढ़ रहे थे, केशव और जयमल्ल को गुफ़ा से बाहर आते हुए देखा।

उसने राजगुरु से कहा, "गुफ़ा में एक नहीं दो मान्त्रिक हैं, देखिये तो।" उसने गुफ़ा की ओर हाथ दिखाया।

सैनिकों के इस प्रकार कहते ही राजगुरु के साथ केशव के बूढ़े पिता ने भी उस तरफ़ देखा। उसकी जान में जान आई। उसका लड़का जीवित था। जैसा उसको भय था, वैसा कुछ न हुआ था। मान्त्रिक ने उसका कुछ न बिगाड़ा था। गनीमत थी।

राजगुरु ने भागते हुए केशव और जयमल्ल को देखते ही कहा, "वह मान्त्रिक नहीं है, उसके शिष्य होंगे। मान्त्रिक अब तक गुफ़ा से, किसी और रास्ते चला गया होगा। नहीं तो वहीं कोई ऐसा गुप्त स्थल होगा जहाँ वह छिप गया होगा। हमें इसके शिष्यों को भी पकड़ना होगा। तुम चारों
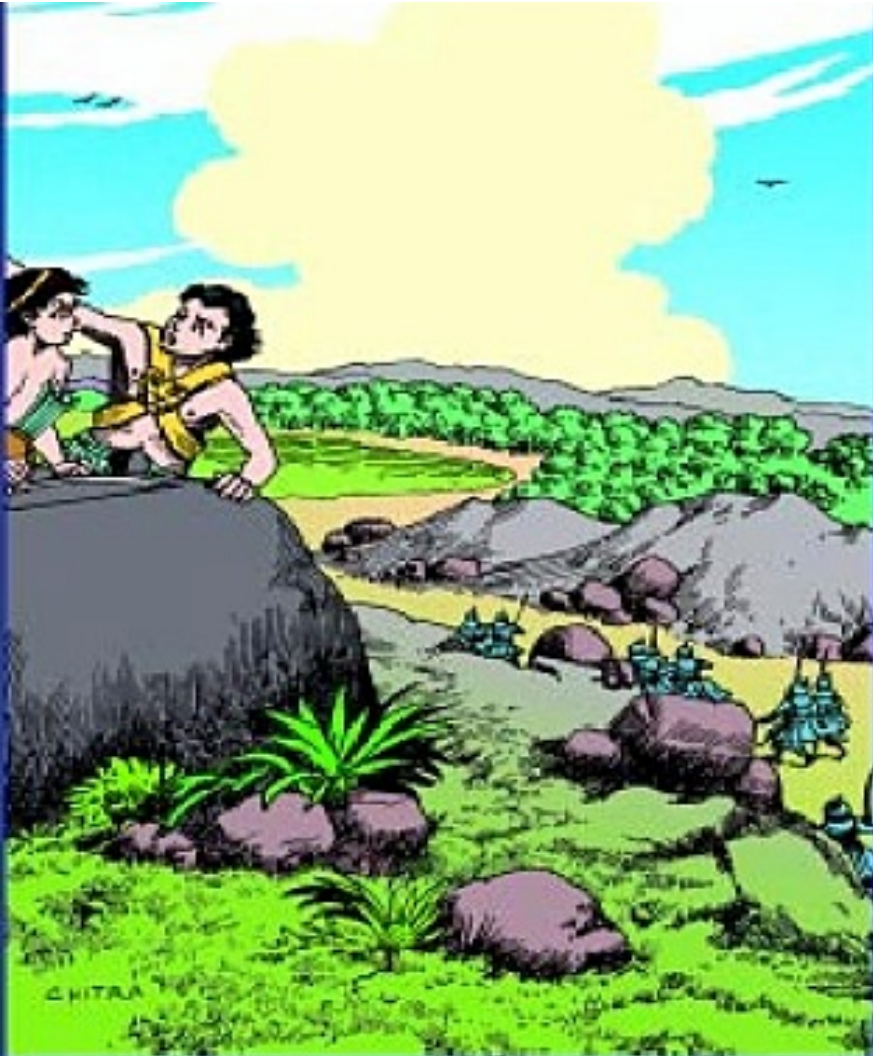
ओर से उन्हें घेर लो।'' उसने सैनिकों को आज्ञा दी।

वे सैनिक, जो तब तक एक झुण्ड में जा रहे थे कई टुकड़ियों में बँट गये और घेरा-सा बनाकर पहाड़ पर चढ़ने लगे।

केशव और जयमल्ल उनको देखकर स्तब्ध से खड़े रहे। वे यह न सोच सके कि किधर भागा जाये।

''सैनिक हमें चारों ओर से घेरने की कोशिश कर रहे हैं। उनकी नज़र बचाकर कैसे भागा जाये?'' केशव ने पूछा।

''मैं भी यही सोच रहा हूँ।'' जयमल्ल यह कहकर एक क्षण रुका। ''हम एक काम करें। जब तक ये सैनिक हमारा पीछा करते रहेंगे तब तक हम जंगल में न जा सकेंगे। इसलिए हम यहीं कहीं किसी गुफ़ा में छिप जायें।''

''जो हमें पकड़ने निकले हैं, क्या वे हमारे लिए गुफ़ाएँ, गड्ढे वगैरह नहीं छान डालेंगे? कुछ भी हो, गुफ़ा में से निकलते ही उन लोगों ने हमें देख लिया तभी से हम उलझन में पड़ गये।'' केशव ने कहा।

''केशव, तुम न घबराओ। हम ऐसी कोशिश करेंगे कि इन सैनिकों के हाथ आयेंगे ही नहीं। यदि हम पकड़े भी गये, तो मैंने एक तरीका सोच रखा है, जिससे हम अपने प्राण बचा सकेंगे।'' जयमल्ल ने कहा।

केशव जानना ही चाहता था कि वह क्या चाल है कि जयमल्ल पासवाली एक गुफ़ा में कूदा। ''केशव, यहाँ के अन्धेरे से मत डरो। मेरे पीछे आओ। मैं गुफ़ा का रास्ता अच्छी तरह जानता हूँ। बेफिक्र चले आओ।'' जयमल्ल ने संकेत से केशव को अपने पीछे बुलाते हुए कहा।

केशव और कुछ कर भी नहीं सकता था। जयमल्ल के पीछे केशव भी गुफ़ा में घुसा। अन्दर अन्धेरा था। जयमल्ल दोनों हाथ फैलाकर गुफ़ा की दीवारें छूता आगे बढ़ा। उसने केशव को सावधानी से आने के लिए कहा।

राजगुरु की आज्ञा पर जो मान्त्रिक की गुफ़ा और आस पास के प्रदेश को घेरने निकले थे, उन सैनिकों ने जयमल्ल और केशव को नहीं देखा।

उनमें से चार हर गुफ़ा में झुककर झाँकते झाँकते आखिर ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक की गुफ़ा के

पास आये। पर ज्यों ही उन्होंने गुफ़ा के अन्दर कालभैरव की मूर्ति देखी तो वे इतने डर गये कि वे मूर्छित होते होते बचे।

"भयंकर आकृति है। रौद्र रूप है। हमारे पैरों के नीचे की जमीन खिसक रही है।" कहकर दो सैनिक गुफ़ा के सामने दण्डवत करके गिर गये। सैनिकों का चिल्लाना सुन राजगुरु और सेनापति वहाँ भागकर गये। गुफ़ा के सामने दोनों सैनिक मूर्छित पड़े थे।

और दो सैनिक गुफ़ा से सटे सटे खड़े कोई स्तोत्र गुन गुना रहे थे। सैनिकों की हालत देखकर सेनापति गरमा उठा। उसने नीचे पड़े सैनिकों को लात मारी। "अरे, तुम मर गये हो, या जिन्दे हो?" उसने दाँत पीसे। वह गुस्से में इधर - उधर चहल कदमी करने लगा।

सेनापति के लात मारते ही दोनों सैनिक, जो नीचे गिरे हुए थे, यकायक उठ खड़े हुए। और जो स्तोत्र जप रहे थे उन्होंने आँखें खोलीं। फिर चारों सैनिकों ने एक स्वर में कहा, "गुफ़ा में उस भयंकर मूर्ति को देखते ही हमारे शरीर स्वाधीन नहीं रहे, सेनापति।"

"अरे हम ब्रह्मापुर के सैनिक हैं।" कहते हुए राजगुरु ने गुफ़ा में प्रवेश किया। "सैनिकों को निडर और साहसी होना चाहिये। सैनिक, सेनापति, सब मेरे पीछे आ जाओ।"

गुफ़ा में सर्वत्र नीरवता थी। कालभैरव की मूर्ति के सामने मान्त्रिक ने जो अग्नि जलाई थी वह अभी जल रही थी। उसका धुंआ अभी गुफ़ा में

इधर-उधर बह रहा था। भयंकर वातावरण था।

चारों तरफ़ देखते हुए राजगुरु चिल्लाया, "सेनापति।"

सेनापति अन्दर गया। उसके पीछे उसके सैनिक घबराते घबराते घुसे।

"इस गुफ़ा में से कहीं अवश्य कोई गुप्त मार्ग जाता होगा। मुझे सन्देह है कि वह उसी रास्ते चला गया होगा। उसके दोनों शिष्यों को गुफ़ा में से भागते हुए हमने देखा ही था। उन्हें राजा का अंगरक्षक ढूँढ़कर पकड़ ही लेगा। हमें इस मान्त्रिक को पकड़ना होगा।" राजगुरु ने कहा।

सेनापति ने चारों ओर गौर से देखा। उसे कहीं कोई दरवाजा नहीं दिखाई दिया। "गुफ़ा में हम जिस रास्ते आये हैं, सिवाय उस रास्ते के

और कोई रास्ता नहीं दिखाई दे रहा है, राजगुरु!'' उसने कहा।

''जो रास्ता यों ही दीख जाये वह कैसे गुप्त मार्ग होगा? गुफा में हर जगह दबाकर देखो, अगर कोई गुप्त द्वार होगा, तो वह खुल जायेगा।'' राजगुरु ने कुछ सोचते हुए कहा।

सैनिकों ने सारी जगह ठोककर देखी। कहीं कोई गुप्त मार्ग नहीं दिखाई दिया।

इस बीच राजगुरु कालभैरव मूर्ति को ध्यान से देखने लगा। यकायक उसे सन्देह हुआ। सेनापति ने जब आकर बताया कि कहीं कोई गुप्त मार्ग नहीं है, तो राजगुरु ने उस कालभैरव की मूर्ति दिखाते हुए कहा, ''शायद उस मूर्ति के नीचे कोई गुप्त मार्ग होगा। नहीं तो मान्त्रिक कहाँ गया होगा? मूर्ति को हिलाकर देखो।''

सैनिक और सेनापति ने कालभैरव की मूर्ति को ऊपर उठाने का प्रयत्न किया। पर मूर्ति हिली नहीं। उन्होंने इधर-उधर खींचने की भी कोशिश की। पर मूर्ति तब भी नहीं हिली।

राजगुरु ने इस बार मूर्ति के सिर से नीचे टटोलना शुरू किया। उसने उसकी पीठ पर ठोककर देखा। ''ओह ! तो यह है रहस्य ! मैं सोच रहा था कि यह कोई जली हुई मूर्ति है। नहीं तो यह यूँ ही जुड़ी - जुड़ाई मूर्ति है। यदि किसी भाग को हिलाया गया, तो अवश्य इसके दो टुकड़े हो जायेंगे। मुझे सन्देह हो रहा है कि मान्त्रिक इसके पेट में कहीं छिपा हुआ होगा। यह भी सम्भव है कि वह हमारी बातचीत सुन रहा हो।'' कहता - कहता वह जोर से हँसा।

राजगुरु के यह कहते ही सैनिक और सेनापति, मूर्ति के सिर और पैर खींचने लगे। सैनिक अब भी उस मूर्ति को देखकर डर रहे थे। वे ऐसे इधर-उधर देख रहे थे जैसे तपते लोहे को छू रहे हों।

राजगुरु यह सब देख रहा था। उसने क्रुद्ध होते हुए उनकी ओर देखा। ''क्यों इतने डर रहे हो; तुम्हारे प्राणों को कुछ न होगा।''

सैनिकों का भय, राजगुरु का कहना सुनकर, गया हो या न गया हो, पर वे अब यह सोच कर डरने लगे कि कहीं ऐसा न हो कि उनकी नौकरी ही चली जाये।

राजगुरु हर तरह से समर्थ था। राजा उसकी बात सुनता था। राजगुरु की हर बात राजा मानता

था। मंत्री और सेनापति भी उससे डरते थे। इसके अतिरिक्त वह मंत्र-तंत्र भी जानता है। इसकी मंत्र शक्ति से डर कर मांत्रिक भी भाग गया। इसकी आज्ञा के पालन में ही हमारी भलाई है। यह सोच, सैनिक जी जान से कालभैरव की मूर्ति को इधर - उधर खींचने लगे। जब उनमें से एक ने मूर्ति की पूँछ पकड़कर ऊपर नीचे खींची, तब बिजली की तरह मूर्ति दो भागों में टूटकर नीचे गिर गई।

राजगुरु के आश्चर्य की सीमा न थी। सैनिकों की बात तो कहने की आवश्यकता ही नहीं। मान्त्रिक ने कालभैरव के पेट में से किसी गुप्त मार्ग की व्यवस्था की होगी। अब वह उस मार्ग से भाग गया होगा। या उसी में कहीं छिपा बैठा होगा।

राजगुरु ने यह सोचकर, सेनापति से कहा, ''सेनापति, मान्त्रिक को पकड़ने की बात, अब लगता है, कुछ आसान हो गयी है। जब हमारे सैनिक पहाड़ की गुफ़ाएँ छान रहे हैं तो वह पहाड़ से उतर कर जाने का प्रयत्न नहीं करेगा। अब यह मार्ग तुमने देख लिया है,न मालूम यह कहाँ जाता है। मान्त्रिक इसी में कहीं छिपा हुआ होगा। हमारे सैनिकों को मशालें देकर सब जगह देखने के लिए कहो।''

गुफ़ा में मान्त्रिक ने अपने उपयोग के लिए कुछ मशालें रख रखी थीं। उन मशालों को सैनिकों ने वहीं रखे तेल में डुबाया, जलाया। सेनापति रास्ता दिखा रहा था। वे कालभैरव के पेट में से जाते हुए मार्ग में उतर पड़े।

दागोंवाले शेर की गुफ़ा में छिपे हुए केशव और जयमल्ल ने कालभैरव की मूर्ति के दो टुकड़े होने की ध्वनि सुनी। शेर गुफ़ा के सामने के पत्थर पर आराम से पड़ा सो रहा था।
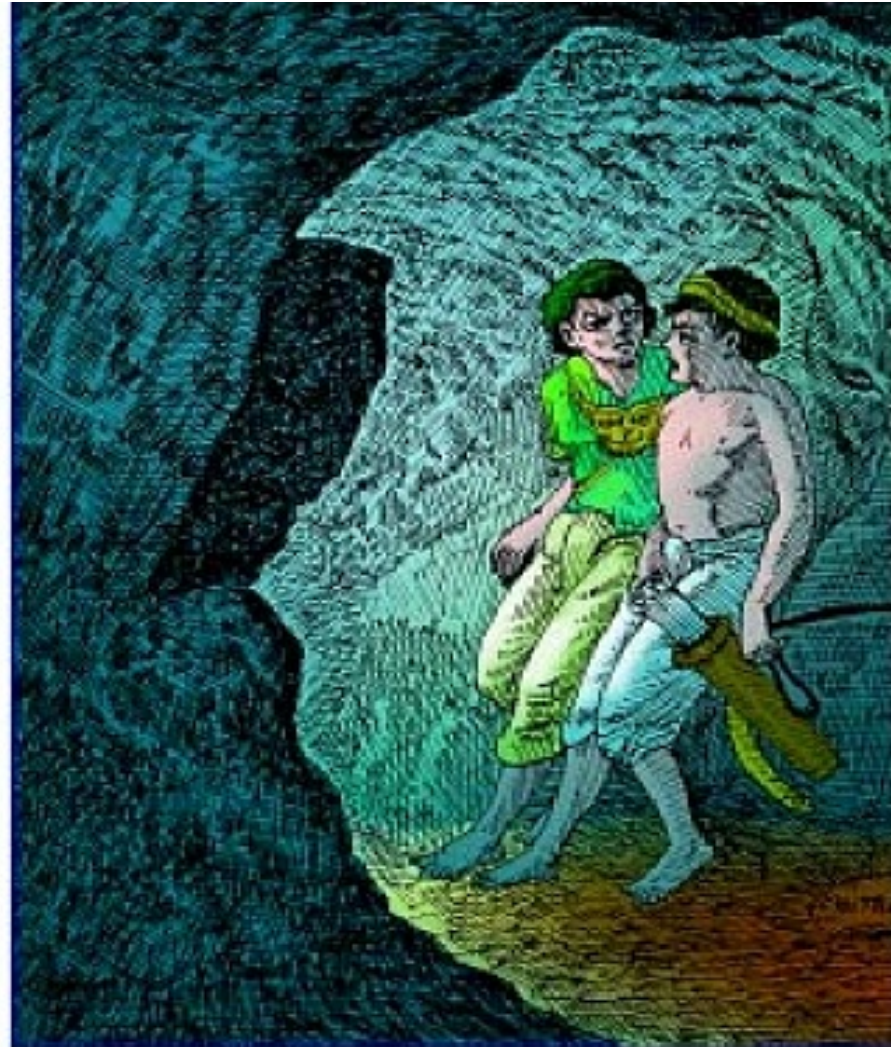
''ब्राह्मदण्डी का रहस्य सैनिकों को मालूम हो गया है। अब वे उसे बाहर खींचकर रहेंगे।'' जयमल्ल ने कहा। इतने में, जिस गुफ़ा में वे छिपे हुए थे उसके पीछे किसी की आहट सुनाई पड़ी ।

''सैनिकों को हमारे छिपने की जगह मालूम हो गई है।'' केशव ने कहा।

जयमल्ल एक छलांग में गुफ़ा के पीछे गया। और वहाँ एक पत्थर पर लोहे का एक गर्डर रख दिया। फिर धीमे - धीमे कदम रखता केशव के पास आया। उसके कान में उसने कहा, ''अब हमें सैनिकों की तरफ़ से कोई खतरा नहीं है। वे

इतना ही जान सकेंगे कि वहाँ एक पत्थर तो है। पर वह पत्थर, गुफ़ा का द्वार है वे न जान सकेंगे। इसलिए अब हम निरापद हैं। मगर ब्राह्मदण्डी का क्या हुआ?'' उसने सन्देह करते हुए पूछा।

तभी पीछे से किसी का चिल्लाना सुनाई दिया, ''शिष्य''।

''शिष्य'' बोलने वाले की आवाज पहचानते ही जयमल्ल काँपने लगा। उसने केशव के कान में कहा, ''कालभैरव के पेट में से एक गुप्त मार्ग है, पर वह यहाँ पहुँचता था, यह मैं न जानता था। जब उसे मालूम हो गया होगा कि उसका रहस्य सैनिक जान गये हैं, तो वह यहाँ भागकर आ रहा होगा। यदि हमने उस पत्थर को हटाया, तो हम भी सैनिकों द्वारा पकड़ लिए जायेंगे। इसलिए हमारा चुपचाप रहना ही अच्छा है।''

इस बीच ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक कई बार ''शिष्य, शिष्य'' चिल्लाया, फिर वह गुफ़ा के पिछले हिस्से को मन्त्रदण्ड से पीटने लगा। पर उसे कहीं से भी कोई जवाब न मिला। केशव और जयमल्ल गुफ़ा के कोने में चुपचाप बैठे थे।

और इधर राजगुरु की आज्ञा से जो सेनापति और सैनिक गुप्त मार्ग में गये थे अन्धेरे में वे बहुत भटके। फिर थोड़ी देर बाद वे राजगुरु के पास वापस आ गये। ''क्या मान्त्रिक नहीं मिला?'' राजगुरु ने पूछा।
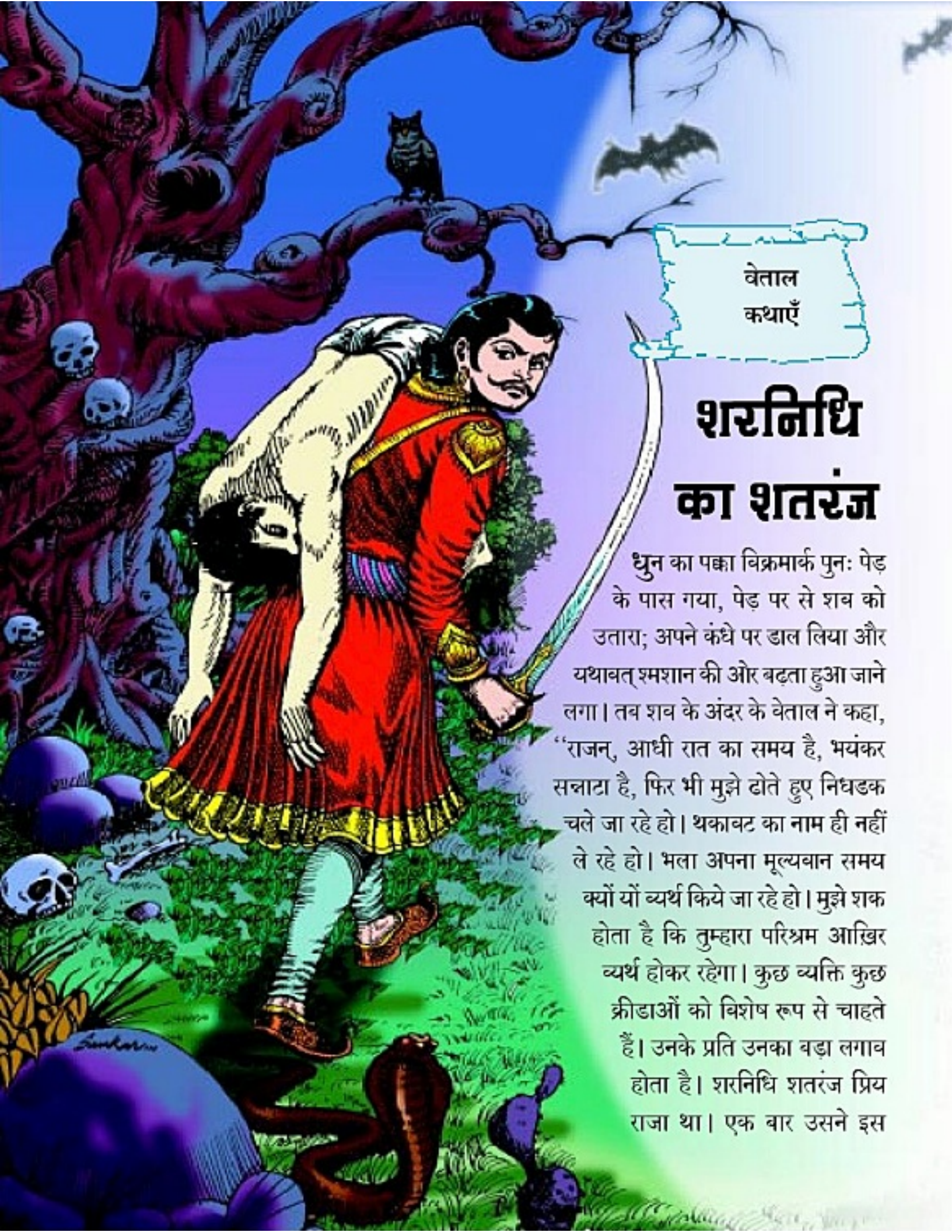
''गुरु, उसका इस मार्ग में पता न लगा। रास्ता कहीं भी सीधा नहीं है। अंगुलियों की तरह हर तरफ़ रास्ते जा रहे हैं।'' सेनापति ने कहा।

''तो यह बात है!'' राजगुरु कुछ देर तक सोचकर कहा, ''इसमें सन्देह नहीं है कि वह गुफ़ा में कहीं छिपा हुआ है। उसके बाहर निकलने का एक ही मार्ग है। फिर थोड़ी देर तक सोचने के बाद कहा, ''जाओ, तुम सब जाकर सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी कर लाओ। गुफा के रास्ते में उन्हें डाल दो और आग जला दो। वह धुँआ न सह सकेगा। और किसी न किसी रास्ते बाहर अवश्य निकलेगा। तब उसे पकड़ सकते हैं।''

तुरंत सैनिकों ने मार्ग के द्वार पर बहुत-सी लकड़ियाँ जमा कर दीं और उस पर तेल छिड़क कर आग लगा दी। ***(अभी है)***

वेताल कथाएँ

शरनिधि का शतरंज

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया, पेड़ पर से शव को उतारा; अपने कंधे पर डाल लिया और यथावत् श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन्, आधी रात का समय है, भयंकर सन्नाटा है, फिर भी मुझे ढोते हुए निधडक चले जा रहे हो। थकावट का नाम ही नहीं ले रहे हो। भला अपना मूल्यवान समय क्यों यों व्यर्थ किये जा रहे हो। मुझे शक होता है कि तुम्हारा परिश्रम आख़िर व्यर्थ होकर रहेगा। कुछ व्यक्ति कुछ क्रीडाओं को विशेष रूप से चाहते हैं। उनके प्रति उनका बड़ा लगाव होता है। शरनिधि शतरंज प्रिय राजा था। एक बार उसने इस

क्रीडा में एक गंधर्व पर विजय भी पायी। शर्त के अनुसार जीतने पर उसे फिर से यौवन पाना था। परंतु जीतकर भी उसने यह सुअवसर हाथ से फिसल जाने दिया। उसकी कहानी सुनाऊँगा। ध्यान से सुनो,'' फिर बेताल शरनिधि की कहानी यों सुनाने लगा:

शरनिधि मधुबन का शासक था। शतरंज उसे जान से भी ज़्यादा प्यारा था। राजधानी में हर साल इनकी प्रतियोगिताएँ चलाया करता था। शरनिधि की धर्मपत्नी प्रभावती देवी, उनकी दोनों पुत्रियाँ वैजयंती और मेघना भी शतरंज के प्रति विशेष रुचि दिखाती थीं।

एक पूर्णिमा की रात को वैजयंती और मेघना उद्यानवन में बैठकर शतरंज खेलने में तल्लीन थीं। उस समय आकाश में विचरते हुए समीर नामक गंधर्व ने यह दृश्य देखा। आतुरतावश उसने अपना रथ वहाँ उतारा। जैसे ही वैजयंती जीती, वह प्रत्यक्ष हुआ और कहा, ''बहुत ही अद्‍भुत खेल खेला है तुमने वैजयंती।''

अकस्मात् ही सामने खडे गंधर्व को देखकर दोनों बहनें घबरा गयीं।

अपने को संभालते हुए पहले वैजयंती ने कहा, ''इस उद्यानवन में किसी पराये का आना मना है। यहाँ ख़ास पहरा भी है। फिर यहाँ आपका आना कैसे संभव हो पाया?''

''मेरा नाम समीर है, मैं गंधर्व हूँ; शतरंज प्रिय हूँ। चांदनी में गगन विहार करते हुए आप लोगों को देखा और भूमि पर उतरे बिना मुझसे रहा नहीं गया। आप दोनों को आपत्ति न हो तो आपमें से किसी एक के साथ शतरंज खेलना चाहूँगा।''

सिर हिलाते हुए वैजयंती ने अपनी सहमति दे दी। तुरंत खेल शुरू हो गया। देखते-देखते गंधर्व ने वैजयंती को हरा दिया और मेघना से कहा, ''क्या तुम भी खेलना चाहोगी?''

मेघना जानती थी कि उसकी हार निश्चित है, फिर भी उसने गंधर्व से खेलने की इच्छा प्रकट की, क्योंकि वह समझती थी कि यह एक सुवर्ण मौक़ा है और जो अविस्मरणीय होगा।

खेल शुरू हुआ। मेघना बड़ी ही सावधानी से चाल चलती रही। परंतु, दस ही चालों में गंधर्व ने मेघना को हरा दिया और ठठाकर हँसने लगा, मानों वह यह बताना चाहता हो कि मेरे सामने तुम जैसे नौसिखियों की क्या गिनती।

“अगली पूर्णिमा को ठीक इसी समय पर फिर से आऊँगा। एक और बार खेल खेलेंगे,” कहकर वह रथ की ओर बढ़ा।

दोनों युवरानियों को अंत:पुर में देरी से आते हुए देखकर महारानी ने पूछा, “लौटने में इतनी देरी क्यों हुई? मतलब यह हुआ कि अब तक उद्यानवन में क्या शतरंज खेलती रहीं ?”

मेघना ने कहा, “हाँ, एक गंधर्व ने हम दोनों के साथ शतरंज खेला।” आश्चर्य प्रकट करती हुई रानी प्रभावती ने बैजयंती से पूछा, “क्या यह सच है ?”

“हाँ माँ, मेघना ने सच ही बताया। वह यह कहकर गया कि अगली पूर्णिमा के दिन फिर आऊँगा और शतरंज खेलूँगा।” बैजयंती ने माँ के संदेह को दूर करते हुए कहा।

इतने में, राजा शरनिधि वहाँ आया। रानी ने पूरा किस्सा उसे सुनाया। शरनिधि ने भी आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, “इसका यह मतलब हुआ कि फिर से गंधर्व का आगमन होनेवाला है।” यों कहकर वह सोच में पड़ गया।

अगली पूर्णिमा के दिन प्रथम पहर के दौरान बैजयंती, मेघना यथावत् चंद्रशिला पर आसीन थीं। राज दंपति पास ही की चमेली के कुंज के पीछे खड़े थे और बैचैनी से गंधर्व की प्रतीक्षा कर रहे थे।

थोड़ी ही देर में गंधर्व उद्यानवन में रथ से उतरा और लताकुंज की ओर दृष्टि फेरते हुए कहा, “शरनिधि, महारानी समेत लताकुंज के पीछे

छिपने की क्या आवश्यकता है? तुम्हें आपत्ति न हो तो तुम्हारे साथ भी शतरंज खेलना चाहता हूँ। खेलोगे?”

गंधर्व ने स्वयं आमंत्रित किया, इसपर खुश होता हुआ शरनिधि आगे आया। राजा और समीर शिला पर आमने-सामने आसीन थे। प्रभावती देवी, बैजयंती, मेघना बगल ही में बैठी थीं।

“स्पर्धा जो भी हो, बाजी लगाने पर ही उसमें मज़ा आता है। आपका क्या कहना है?” गोटियों को ठीक करते हुए गंधर्व ने कहा।

शरनिधि ने प्रश्न को गंभीरता से न लेते हुए पूछा, “तो हारना क्या होगा?”

तब गंधर्व ने कहा, “अगर होड़ में मैं हार गया तो, अपनी गंधर्व महिमा से अधेड़ उम्र के तुम्हें फिर से युवक बना दूँगा। तुम अगर हारे तो, अपनी

पुत्रियों में से एक पुत्री के साथ मेरा विवाह करोगे। क्या तुम्हें यह शर्त मंजूर है?''

राजा सोच में पड़ गया। अगर वह हार जाए तो सुयोग्य गंधर्व उसका दामाद बनेगा। वह गंधर्व को हराये तो वृद्धावस्था में क़दम रखनेवाले उसे पुनः यौवन प्राप्त होगा।

हारूँ या जीतूँ, दोनों ओर से मुझे ही लाभ पहुँचनेवाला है। यह सोचते हुए वह मन ही मन खुश हुआ।

उस समय दोनों राजकुमारियाँ भी यही सोचने लगीं कि उनके पिता को गंधर्व के हराने पर वह किससे पाणिग्रहण करेगा। रानी तो कुछ और ही गंभीरतापूर्वक सोच रही थी। उसका पति वृद्धावस्था में क़दम रखनेवाला है, अगर गंधर्व को हराकर वह यौवन प्राप्त करे तो वह उसका तिरस्कार करेगा और हो सकता है, किसी दूसरी स्त्री से विवाह कर ले। वह चिंतित होने लगी।

इतने में एक विचित्र घटना घटी। एक और रथ आकाश से उद्यानवन में उतरा। निश्चेष्ट होकर जब सब लोग उस रथ की ओर देख रहे थे तब एक अति सुंदर गंधर्व कन्या उनके पास आयी।

राजा शरनिधि ने नख से शिख तक उसे ग़ौर से देखा और आश्चर्य-भरे स्वर में उससे पूछा, ''जान सकता हूँ, आप कौन हैं?''

''मैं इस गंधर्व की पत्नी हूँ। यह देखने आयी हूँ कि जिस सुंदरी से विवाह रचाने के लिए ये तत्पर हैं, वह आखिर है कौन?'' व्यंग्य-भरे स्वर में उसने कहा।

राजा एक निर्णय पर आया और गंधर्व को संबोधित करते हुए कहा, ''ठीक है, खेल शुरू करेंगे। परंतु एक शर्त है। शतरंज के इस खेल में हार-जीत किसी की भी हो, उससे मुझे या मेरे परिवार के किसी भी सदस्य को हानि पहुँचनी नहीं चाहिये। क्या आपको यह स्वीकार है?''

गंधर्व ने एक बार अपनी पत्नी को देखा और शरनिधि से कहा, ''मैं समझ गया हूँ कि आप क्या सोच रहे हैं। वचन देता हूँ, आपको कोई हानि नहीं पहुँचाऊँगा।''

जैसे ही खेल शुरू हुआ, गंधर्व बीच-बीच में अपनी पत्नी को तिरछी नज़र से देखता रहा। गंधर्व की पत्नी ने परोक्ष रूप से खेल में शरनिधि की सहायता की। गंधर्व की हार हुई।

खिन्न गंधर्व जब शरनिधि को यौवन प्रदान

करने के उद्देश्य से मंत्रोच्चारण करने ही जा रहा था, तब राजा ने कहा, ''मुझे किसी भी प्रकार का यौवन नहीं चाहिये।''

बेताल ने कहानी सुनायी और कहा, ''राजन् शरनिधि के व्यवहार में कोई अनजानी संदिग्धता, चपलता दिखायी देती है। राजा शतरंज में हारे या जीते, उसे ही लाभ पहुँचे, ऐसा आश्वासन गंधर्व ने उसे दिया और यह शरनिधि का भाग्य ही कहा जा सकता है। परंतु जब बाजी जीत गया, उसने यौवन अपनाने से इनकार कर दिया। क्या यह उसकी मूर्खता नहीं? अगर राजा खेल में हार जाता तो उसे अपनी पुत्रियों में से किसी एक से गंधर्व का विवाह करना पड़ता। मेरे इन संदेहों के उत्तर जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने बेताल के संदेहों को दूर करने के उद्देश्य से कहा, ''यह सच है कि राजा शरनिधि मानव सहज दुर्बलता का शिकार था। उसे इस बात की खुशी थी कि हारने पर या जीतने पर उसी का लाभ होगा। परंतु, खेल को शुरू करने के पहले ही गंधर्व समीर की पत्नी ने अपने पति की मनोकामना के रहस्य को खोल दिया। अब शरनिधि ताड़ गया कि अगर वह बाजी हार जाता और अपनी पुत्रियों में से किसी एक से गंधर्व का विवाह करना पड़ता तो कितना बड़ा अनर्थ हो जाता। उसी प्रकार वह यह भी जान गया कि गंधर्व के वरदान के बल पर उसे यौवन प्राप्त हो जाता तो भविष्य में कितनी बड़ी-बड़ी समस्याओं का सामना उसे करना पड़ता। वह कुशाग्र बुद्धि का था, इसलिए आनेवाले संकट को वह भांप पाया। अगर वह अपनी पुत्रियों की उम्र का हो जाए तो वे भला उसे अपना पिता कैसे मानेंगी? उसी प्रकार उसकी महारानी अधेड उम्र की हो और वह युवा तो क्या जगहँसाई नहीं होगी? अतः शरनिधि ने जो निर्णय लिया, उसमें न कोई संदिग्धता है, न ही कोई मूर्खता। इसमें तो उसकी बुद्धिमानी ही दृष्टिगोचर होती है।

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव सहित गायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(शांतकुमार की रचना के आधार पर)

हमारा राष्ट्रीय पक्षी

मयूर पक्षी भारत की एक बहुत बड़ी विचित्रता है। कहा जाता है कि सिकन्दर महान, जिसने ईसा पूर्व ३२६ ईस्वी में भारत पर आक्रमण किया था, एक मयूर देख कर इतना मुग्ध हो गया कि उसने कुछ मयूर पक्षियों को यूनान ले जाने का निश्चय किया।

मयूर का अर्थ है हजार आँखोंवाला प्राणी। लम्बी नीली गर्दन, पंखे की आकृतिवाली कलगी, परोंवाली शानदार पूँछ के साथ मयूर, पक्षियों में सबसे सुन्दर दिखाई पड़ता है।

प्रत्येक पर के आखिरी सिरे पर आधा चाँद या आँख की आकृति बनी होती है। जो पूँछ उठाने पर पंखे की तरह फैल जाती है, जिससे लगता है कि हजार आँखें देख रही हों।

मयूर वर्ष में एक बार अपनी पूँछों को गिरा देते हैं और उनकी जगह नई पूँछें उग आती हैं। उन्हें एकत्र कर उनसे सुन्दर पंखे बनाये जाते हैं।

सम्राट शाहजहाँ के लिए बनाये गये लोक प्रसिद्ध मयूरसिंहासन पर रत्नजटित मयूर बने हुए थे। उस सिंहासन को आक्रामक नादिरशाह फारस (आधुनिक ईरान) ले गया।

हिन्दू पौराणिक गाथाओं के अनुसार कृष्ण मोरपंख का मुकुट पहनते थे। मयूर शिव के पुत्र और युद्ध के देवता कार्तिकेय का वाहन है।

उत्तर प्रदेश की एक लोक कथा

ज़मीन्दार और उसकी कटार

सेठ गिरधारीलाल कालिबन गाँव का ज़मीन्दार था। उसके पास ढेर सारे खेत थे जिन पर काम करने के लिए उसने बहुत से मज़दूरों को बहाल कर रखा था। वह कंजूस था, लेकिन धन जमा करनेवाला सामान्य कंजूस नहीं, बल्कि धन खर्च करते समय उसे कंजूसी करने में बड़ा मजा आता था। वह मज़दूरों को पूरी मजदूरी नहीं देता या किसी बहाने से दूसरे दिन पर टाल देता था।

बेचारे गरीब मज़दूर इसलिए चुपचाप रह जाते थे कि कहीं और उन्हें शायद काम न मिले। चालाक सेठ किसी शुभ दिन या त्योहार के दिन का इंतजार करता और उस दिन मज़दूरों को बुला कर उनकी मजदूरी का केवल एक हिस्सा ही देता। वह भी इसलिए दे देता था ताके मज़दूर उसे गाली-ग्लौज न दें। मजदूर बेचारे इसलिए चुपचाप थोड़ा-सा खुश हो चले जाते कि कम से कम एक दिन तो उन्हें भर पेट खाना मिलेगा और यह आशा लगाये रहते कि एक दिन सेठ उनका सारा बकाया तो चुकायेगा ही। आखिर वह इतना गरीब तो नहीं हो जायेगा कि उनकी मज़दूरी ही न दे सके, क्योंकि उसके पास तो काफी धन है ।

एक दिन गिरधारीलाल शहर के माहवारी हाट में मवेशी खरीदने गया, क्योंकि उसकी गायें अब उतना दूध नहीं दे रही थीं जो सबके लिए काफी हो। बाजार में उसने दो गायों को पसन्द किया और मोल-भाव कर दाम तय किया।

अचानक उसे याद आया कि पैसों की उसकी
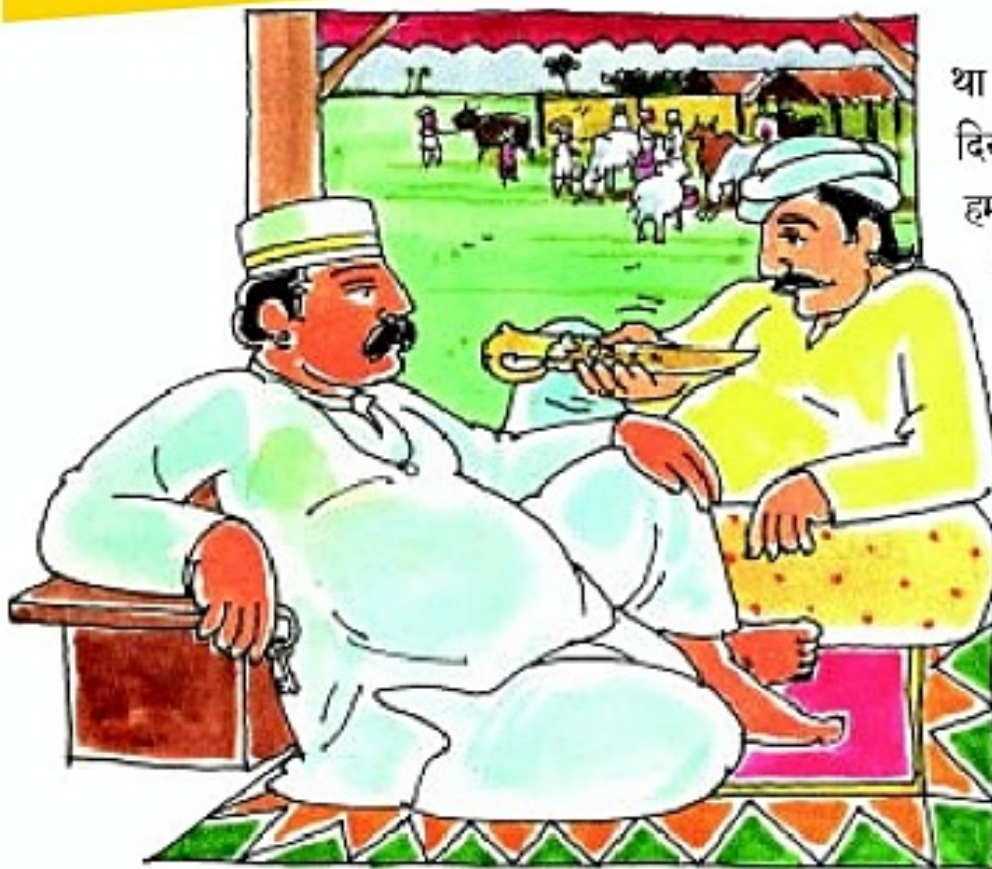
था। सेठ गिरधारी लाल ने अपनी कटार दिखाते हुए महाजन से कहा, ''यह हमारी पुरतैनी कटार हमारे दादा की भेंट है। यह हमारे लिए अमूल्य है। साथ ही इसकी मूठ सोने की है। लेकिन लाचारी है इसलिए इसकी जमानत में देने को तैयार हूँ।'' महाजन कटार की जमानत पर उसकी जरूरत भर ऋण देने को तैयार हो गया। गिरधारी लाल ऋण लेकर और कुछ दिनों में ऋण लौटा कर कटार वापस ले जाने का वादा करके बाजार चला गया

मखमली थैली घर पर छूट गई। अब वह दुविधा में पड़ गया। वह सौदे को हाथ से जाने देना नहीं चाहता था। वह जानता था कि मवेशी का सौदागर कल तक इन्तजार नहीं करेगा और किसी के हाथ गायों को बेच देगा। उसने सोचा कि उसे किसी न किसी तरह पैसों का जुगाड़ वहीं करना होगा ताके उसी दिन गायों को घर ले जा सके।

गिरधारीलाल किसी महाजन की तलाश करने लगा। बाजार के पास ही उसे एक महाजन मिल गया। लेकिन किसी जमानत या सुरक्षा के बिना उधार देने को तैयार न था। सेठ के पास उस समय सोने की मूठ वाली कटार थी जो उसे उसके दादा ने भेंट में दी थी। घर से बाहर जाते समय डाकुओं के डर से वह इसे हमेशा अपने पास रखता

और उन गायों को खरीद कर उन्हें एक युवक की सहायता से अपना गाँव ले आया।

गिरधारीलाल कई सप्ताह बल्कि कई महीनों तक महाजन को ऋण चुकाने नहीं गया। महाजन धीरज के साथ इन्तजार करता रहा और सोचता रहा कि सोने की मूठ वाली कटार को क्या करे। क्या उसे बेच कर सूद के साथ ऋण का पैसा वसूल कर ले। लेकिन महाजन से कटार कौन लेगा? उलटा, कोई देख लेगा तो जितने लोग उतनी तरह की बातें बनायेंगे और उसकी प्रतिष्ठा धूल में मिल जायेगी।

इसलिए वह चुपचाप रहा और उसने ज़मीन्दार के पास अपने नौकर को भेजनेका निश्चय किया। जब नौकर ज़मीन्दार के घर आया तो वह घर पर नहीं था। नौकर वापस चला गया। कुछ दिनों के

बाद उसे फिर ज़मीन्दार के पास भेजा गया। किन्तु इस बार भी वह ज़मीन्दार से नहीं मिल पाया, क्योंकि वह बीमार होने के कारण सो रहा था। ज़मीन्दार के नौकरों ने महाजन के नौकर को वापस भेज दिया।

महाजन, इस आशा से कि जमीन्दार मेरे नौकर के जाने का सन्देश पाकर ऋण लौटाने के लिए स्वयं आ जायेगा, कुछ और दिनों तक धैर्यपूर्वक सब सहता रहा।

उसके बाद निराश होकर उसने एक योजना बनाई। जब अगली बार नाई सुखराम उसके बाल काटने आया तब उसने उसे सारी कहानी बता दी। और साथ में यह भी कहा कि उसकी कटार कहीं गायब हो गई है। अच्छा यही होगा कि जमीन्दार ऋण वापस कर अपनी कटार लेने न आये।

महाजन जानता था कि नाई खबर फैलाने में माहिर होते हैं और उसके द्वारा शीघ्र ही यह खबर सब तक पहुँच जायेगी कि ज़मीन्दार ने ऋण अभी तक नहीं चुकाया है और महाजन को जमानत में दी हुई उसकी सोने की मूठ वाली कटार गायब हो गई है। सचमुच हुआ भी ऐसा ही। यह खबर आस-पास के गाँवों में सब जगह फैल गई। जब वह नाई बाल काटने के लिए ज़मीन्दार के घर आया तब उसने यह खबर उसे भी सुनाई।

गिरधारीलाल को अब तक इस बात पर शर्म महसूस नहीं हुई थी कि उसने महाजन का ऋण नहीं चुकाया। क्योंकि इस रहस्य को उसके अलावा कोई नहीं जानता था। लेकिन अब उसने अनुमान लगाया कि बहुत से ग्रामीणों को उसके ऋण के बारे में पता लग गया होगा। इसलिए उसने अपनी प्रतिष्ठा बचाने के लिए निश्चय किया कि वह महाजन के पास जाकर यह कहेगा कि पैसे वापस लेने हैं तो मेरी कटार लौटा दो। यद्यपि उसे पूरा विश्वास था कि उसे एक पैसा भी खर्च नहीं करना पड़ेगा क्योंकि कटार खो जाने के कारण महाजन उसे लौटा नहीं सकेगा, फिर भी वह महाजन के पास काफी पैसे लेकर गया।

महाजन के घर पर, जब ज़मीन्दार को यह बताया गया कि उसकी कटार की चोरी हो गई है

तो उसने खूब ही हल्ला मचाया। "किसे विश्वास होगा कि महाजन जमानत के लिए कटार रखेगा?" उसने ऊँची आवाज में चिल्लाते हुए कहा। उसने सावधानीपूर्वक सोने के दस्ते की चर्चा नहीं की। "भला महाजन के घर से कटार कौन चुरायेगा?" वह और भी जोर से चिल्लाया। ज़मीन्दार भीड़ इकट्ठा करने के लिए महाजन का मज़ाक उड़ाते हुए ठठाकर हँसने लगा।

जब सड़क पर काफी भीड़ इकट्ठी हो गई तब ज़मीन्दार ने महाजन से कहा, "क्यों नहीं घर के अन्दर जाकर कटार की खोजबीन करते?" उसे यह उम्मीद थी कि महाजन अन्दर जाकर शीघ्र ही बाहर आ जायेगा और उसे यह कहेगा कि ऋण चुकाना जरूरी नहीं है और हिसाब-किताब बराबर हो गया। औल इस तरह ऋण का एक पैसा भी वापस करना नहीं पड़ेगा।

महाजन दबते-सहमते अन्दर गया और बहुत देर तक बाहर नहीं आया। गिरधारीलाल बार-बार अपनी मखमली थैली निकाल कर दिखा रहा था जिससे भीड़ को यह विश्वास हो जाये कि वह ऋण के पैसे ईमानदारी से वापस लौटाना चाहता है। वह इस प्रकार अपनी खोई प्रतिष्ठा को पुनः प्रतिष्ठित कर सकता है।

अचानक महाजन अन्दर से आते हुए बोला, "सेठ जी, आप की कटार मिल गई। यह रही! मैंने इसे सुरक्षित रूप से रख दी थी, लेकिन कहाँ रखी थी, यह मैं भूल गया था। क्या अब आप मेरा ऋण लौटा देंगे जो बहुत दिनों से बकाया पड़ा था?" उसने भीड़ को सुनाते हुए आखिरी शब्दों पर जोर देते हुए कहा।

गिरधारीलाल को लाचार होकर सूद सहित ऋण के सारे पैसे भुगतान करने पड़े। लोगों ने देखा कि वह ऋण चुकाने के बाद सिर नीचे किये जाने लगा।

भीड़ के लोग छीः छीः कर रहे थे, लेकिन उसने सिर उठाकर किसी को नहीं देखा। गिरधारीलाल को एक सीख मिल गई थी। जिन लोगों को उसके अपमान और शर्मिन्दगी से लाभ पहुँचा वे उसके खेतिहर मजदूर थे। उन्हें अब समय पर पूरी मजदूरी मिलने लगी।

व्यापार–व्यापारी

कमलापुर एक छोटा-सा शहर है। रमाकांत वहाँ का सोने के आभूषणों का मशहूर व्यापारी था। उसकी अकस्मात् मौत हो गयी। अब उसका बेटा रंगनाथ व्यापार व पूरी जायदाद का मालिक बन गया। व्यापार में उसकी अभिरुचि नहीं थी, इसलिए व्यापार के विषय में कभी सोचता नहीं था। जब देखो, विनोद और मनोरंजन में ही समय बिताता था। आमदनी तथा व्यय जैसे मुख्य विषयों पर वह बिलकुल ही ध्यान नहीं देता था। वह ऐसा व्यापार करता था, मानों उसे उनसे कुछ लेना-देना नहीं है।

एक दिन रंगनाथ जब अपने आम के बगीचे में घूम रहा था, तब गहने के कार्यकलापों की देखरेख करनेवाला अवधानी उसके पास आया और कहा, ''मालिक, सुनने में आया है कि कहीं दूर से आया गहनों का एक व्यापारी यहाँ गहनों की दुकान खोलने जा रहा है। सोचिये तो सही, ऐसी स्थिति में हमारा क्या हाल होगा। क्या हम उसके सामने टिक पायेंगे? इससे क्या हमारे व्यापार को नुक़सान नहीं पहुँचेगा?''

रंगनाथ ने व्यंग्य-भरी हँसी हँस दी और कहा, ''हमारे पास कुशल सुनार है। हम जो आभूषण बनाते हैं, उन्हें खरीदने के लिए बड़ी संख्या में लोग आते रहते हैं। इसलिए इस नये व्यापारी के विषय में चिंतित मत होइये। वह हमारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकेगा।''

महीने के अंदर ही नये व्यापारी ने अपनी दुकान खोली। तीन-चार महीनों के अंदर ही वह श्रेष्ठ व्यापारी कहलाया जाने लगा। अधिक संख्या में लोग उसकी दुकान में गहने खरीदने आने लगे। इस वजह से रंगनाथ की आमदनी कम होने लगी। अब दुकान में काम करनेवालों को वेतन देने की स्थिति में भी नहीं रह गया।

रंगनाथ को लगा कि अब इस शहर में रहना

लक्ष्मीपति

उचित नहीं है, क्योंकि अब यहाँ उसका कोई भी आदर नहीं करता है। साथ ही समय-समय पर लोग उसका अपमान करने से भी आनाकानी नहीं रहे हैं। एक दिन रात को पत्नी और संतान को छोड़कर वह चुपचाप घर छोड़कर चला गया । उसे खुद मालूम नहीं था कि कहाँ जा रहा है और उसका गम्य स्थल क्या है। दूसरे दिन दुपहर तक वह यात्रा करता रहा और थकावट के मारे एक पेड़ के नीचे बैठ गया। फिर आँखें बंद कर लीं।

उस समय खेतों की निगरानी के बाद जमींदार सूर्य भूपति बग्घी में लौट रहा था। उसने रंगनाथ को ग़ौर से देखा और मन ही मन सोचा, 'इसका पहनावा देखने पर लगता है कि संपन्न परिवार का है। शायद अकस्मात् बीमार पड़ गया हो।' उसने नौकरों को उसे दिवान के अतिथि गृह में ले जाने का आदेश दिया।

नौकरों ने रंगनाथ से पूछताछ की। चूँकि वह बहुत थका हुआ था, इसलिए वह स्पष्ट बोल नहीं पाया। वे उसे बैलगाड़ी में लिटाकर अतिथि गृह ले गये।

उसे भूखा जानकर भोजन खिलाया। पर, वह नौकरों के सवालों के जवाब देता नहीं था और बताता नहीं था कि वह आखिर है कौन।

उस रात को चोरों के एक गिरोह ने ज़मींदार के भवन में घुसने का प्रयत्न किया। पहरेदारों की चिल्लाहटें सुनकर ज़मींदार और कुछ नौकर जाग गये। ज़मींदार सूर्य भूपति ने सुरक्षित रखे गये हथियारों के कक्ष से तलवारें, ढाल, बर्छियाँ

आदि निकलवाये और खुद चोरों का सामना किया। पंद्रह मिनटों के अंदर ही मुठभेड़ के कारण कुछ चोर घायल हो गये। जब चोरों को लगा कि उनके बचने का कोई उपाय नहीं है तो वे दुम दबा कर भाग गये।

अतिथि गृह के सामने खडे होकर रंगनाथ यह सब कुछ देख रहा था। उसे इस घटना पर बड़ा आश्चर्य भी हुआ।

दूसरे दिन सवेरे वह ज़मींदार के पास गया और हाथ जोड़कर कहा, ''साहब, आपके भवन की हिफ़ाज़त के लिए कितने ही नौकर-चाकर हैं। परंतु आपने स्वयं चोरों का सामना किया, जो शायद आपको शोभा नहीं देता। यह आपके स्तर का काम नहीं है। हो सकता है, आप जोखिम में फंस जाएँ, जख्मी हो जाएँ।''

ज़मींदार ने मुस्कुराते हुए कहा, ''रक्षा करने के लिए नौकर हैं, इसलिए क्या मैं चोरों से दूर रहूँ, छिप जाऊँ। यह सरासर ग़लत है। हमारा जो काम है, उनके साथ मिलकर हमें करना चाहिये। फिर उनसे जो फ़ायदा होगा, उसका एक हिस्सा उन्हें देना चाहिये। किसी भी व्यापारी या ज़मींदार को इस सूत्र का पालन करना चाहिये।''

ज़मींदार के उत्तर ने रंगनाथ को हिलाकर रख दिया। वह समझ गया कि गहनों का सफल व्यापारी होते हुए भी अपनी असावधानी के कारण इस दीन-हीन अवस्था में पहुँच गया है। अपने काम को सिर्फ़ नौकरों पर छोड़ना मूर्खता है। उससे कितनी बड़ी ग़लती हुई। उसने अपना परिचय देते हुए ज़मींदार से कहा, ''महाशय, आपके कारण एक जीवन रहस्य को, व्यापार सूत्र को समझ पाया। अब जाने की अनुमति दीजिये।''

ज़मींदार उसकी बातों पर बेहद खुश हुआ और उसे थोड़ा-सा धन व सोना आदि दिलवाया और साथ ही दो नौकरों के साथ उसे सादर भेजा।

रंगनाथ कमलापुर पहुँचा। ज़मींदार के दिये धन से फिर से गहनों का व्यापार शुरू किया और देखते-देखते पुनः दक्ष व कुशल व्यापारी कहलाया जाने लगा। लोग अब कहने लगे कि पिता ही की तरह वह एक समर्थ व्यापारी है।

महिमावान पत्थर

सवितापुर में सोम और नंद नामक दो मित्र रहा करते थे। नंद समझदार था तो सोम जल्दबाज, मुफ्त में मिलनेवाली चीजों के लिए अधीर।

एक बार दोनों जीविका की खोज में गाँव छोड़कर राजधानी जाने निकल पड़े। जंगल से होते हुए जाते समय उन्होंने एक बृद्ध बैरागी को देखा, जो धूप को सह न सकने के कारण बेहोश गिरा पड़ा था। दोनों दोस्त एक तालाब से पानी ले आये और उसके मुंह पर पानी छिड़का। होश में आने पर उसे पीने के लिए पानी दिया। पानी पीने के बाद बैरागी बैठ गया और उनके परोपकार पर बहुत ही संतुष्ट होते हुए उनसे संबंधित जानकारी पायी। फिर कहा, "पुत्रो, अच्छे प्रयत्न करने पर भगवान तुम्हें अच्छा भविष्य प्रदान करेंगे। दोनों को एक-एक महिमावान पत्थर दूँगा। इनका सही समय पर सही तरीके से उपयोग में लाओगे तो योग्य बन पाओगे।" यों बैरागी ने आशीर्वाद दिया और उन्हें अपनी थैली में से दो पत्थर निकालकर उन्हें दिया। फिर वह वहाँ से चला गया।

दोस्तों ने यात्रा की और चार दिनों के बाद राजधानी की सरहदों पर पहुँचे और वहाँ की एक सराय में ठहरे। जब वे विश्राम लेने लेटे तब उन्होंने देखा कि पास ही बैठे तीन आदमी आपस में धीमी आवाज़ में बातें कर रहे हैं। एक आदमी कह रहा था, "इतने गहनों को मैंने अपने जीवन भर में कभी नहीं देखा। इन्हें पाकर हम धन्य हो गये। अब हम ग़रीब नहीं रहे।" दूसरा आदमी कह रहा था, "क्यों नहीं। राजा के खज़ाने को हमने जो लूटा। सोचा भी नहीं था कि एक ही दिन में इतना कमायेंगे।" तीसरे आदमी ने कहा, "तड़के ही सराय से निकल पड़ेंगे। सैनिकों ने देख लिया तो बस समझो, हमारी ख़ैर नहीं।"

दोनों दोस्तों ने उनकी बातें सावधानी से सुनीं। नंद ने सोचा कि ये चोर हैं और अगर सैनिकों ने इन्हें पकड़ लिया तो ज़रूर इन्हें सज़ा मिलेगी। सोम को जैसे ही मालूम हुआ कि वे क़ीमती गहने

हैं तो उसका मन उत्साह से भर गया। किसी भी प्रकार से उन्हें उनसे हड़पने का उपाय सोचने लगा। चोरों के सो जाने के बाद उसने उस महिमावान पत्थर को एक-एक के मस्तक पर रखा और मन ही मन कहने लगा, 'चोरों की थैलियों में जितने भी गहने हैं, वे मेरी थैली में भर जाएँ।' वे गहने तुरंत सोम की थैली में पहुँच गये। नंद लेटा हुआ था, पर जागा हुआ था। वह यह सब कुछ देखता रहा।

आधी रात को सैनिक सराय में आये और कहने लगे, "ख़बर मिली है कि राजा के ख़ज़ाने के लूटनेवाले लुटेरे इसी सराय में ठहरे हैं।" नंद यह सुनकर निश्चेष्ट रह गया। उसे लगा कि सोम असल में चोर है नहीं, पर उसका पकड़ा जाना निश्चित है। उसने थैली में से बैरागी का दिया पत्थर निकाला और उसे अपने मस्तक पर रखते हुए मन ही मन कहने लगा, 'सोम की थैली में जो गहने हैं, वे फिर से राजा के ख़ज़ाने में हों।'

सैनिक हर एक को धमकी देते हुए ढूँढ़ने लगे। पर एक भी गहना उन्हें नहीं मिला। इतने में चार सैनिक वहाँ पहुँचे और कहने लगे कि गहने ख़ज़ाने के एक कोने में पड़े हुए हैं।

यह सुनकर चोर आश्चर्य में पड़ गये। वे कहने लगे, "हमारी यह पहली चोरी है और इसमें हम विफल हो गये। दंड भुगतने से हम बाल-बाल बच गये। अब आगे कभी भी चोरियाँ नहीं करेंगे और मेहनत करके इज़्ज़त के साथ जीवन बिताएँगे।" उन्होंने यों निर्णय लिया।

पहले तो सोम घबरा गया, पर यह जानने में उसे देर नहीं लगी कि उसके दोस्त ने ही उसे बचाया। उसने निर्णय कर लिया कि भविष्य में कभी भी ऐसी ग़लती नहीं करूँगा। उसने बड़े प्यार से नंद को गले लगाया। सोम में जो परिवर्तन हुआ, उसपर बेहद खुश होते हुए उसने मन ही मन बैरागी को कृतज्ञता जतायी। *-जि.जि.जोशी,*

S/o. जि.पीबा जोसफ, हैदराबाद

अच्छे अंक पाने हों तो...

"परीक्षाओं में अच्छे अंक पाने हों तो क्या करना होगा?" अध्यापक ने पूछा।

हर विद्यार्थी ने अपनी-अपनी राय बतायी।

"मन लगाकर पढ़ना है" एक अच्छे विद्यार्थी ने कहा।

"अक़्लमंदी चाहिये" एक नादान विद्यार्थी ने कहा।

"जिन सवालों को हमने पढ़ा, वे ही परीक्षा में पूछे जाएँ।" भाग्य पर विश्वास रखनेवाले एक विद्यार्थी ने कहा।

अंत में एक नटखट विद्यार्थी ने कहा, "अध्यापक जी, आप हमें ऐसे पाठ पढ़ायें, जिन्हें हम भली-भांति समझ सकें।"

-आर.जाह्नवि, नागपुर

समाचार झलक

सबसे छोटी आयु का छात्र

झांग झिन्यांग ने, जो चीन के लियाओनिंग प्रान्त में पंजिन नगर का निवासी है, तियानजिन नगर के इंजीनियरिंग कॉलेज में औपचारिक रूप से दाखिला लिया है। उसे यह दाखिला नेशनल कॉलेज प्रवेश परीक्षा (एन सी ई ई) पास करने के बाद मिला है, जिसमें उसे कुल ५०५ अंक मिले जो निम्नतम नामांकन अंक से ४७ अधिक है। दस वर्षीय झांग झिन्यांग देश का सबसे छोटी उम्र का कॉलेज-छात्र है। उसने छः वर्ष का प्राइमरी स्कूल पाठ्यक्रम २ वर्षों में पूरा कर लिया और तीन वर्ष का जूनियर हाई स्कूल शिक्षा अगले दो वर्षों में सन २००४ में पूरा कर लिया।

क्योंकि झांग झिन्यांग सामान्य छात्रों से बहुत छोटा है, कॉलेज ने उसके साथ उसके पिता को कॉलेज में आने की स्वीकृति दे दी है। कॉलेज के एक अधिकारी ने स्वीकार किया है झांग को पढ़ाना एक चुनौती होगी, खास कर उसकी असाधारण योग्यता के अनुकूल ज्ञान प्रदान का कार्य।

वृक्षारोपन का कीर्तिमान

तमिलनाडु के नागपट्टिनम जिले में दो तटवर्ती गाँवों के निवासी यह वर्णन करते हुए कभी नहीं थकते कि कैसे सन् २००२ में लगाये हजारों कसुआरिना के वृक्षों ने उनके गाँवों को २६ दिसम्बर के सुनामी से बचाया। नालुवेदपती के ग्रामीणों ने दो वर्ष पहले २३ घण्टों में ८०,२४४ वृक्षों को रोपा। यह एक कीर्तिमान था। इस कीर्तिमान को पिछले साल गाँधी जयन्ती के दिन तोड़ा नालुवेदपती तथा पुष्पबनम गाँव के निवासियों ने जब उन्होंने ४७ एकड़ भूमि पर २४ घण्टों में २,५४,४६४ कसुआरिना वृक्ष के पौधे लगाये। इस वृक्षारोपन में करीब ३०० किसानों ने भाग लिया। यह एक अक्तूबर को ३.४० बजे अपराह्न में आरम्भ हुआ और दूसरे दिन उसी समय समाप्त हुआ। इस विश्व कीर्तिमान को तीन स्वतन्त्र पर्यवेक्षकों ने देखा था।

चतुर बहू

सदानंद, सरस्वती का इकलौता बेटा था। चूँकि बचपन में ही उसका पिता गुज़र चुका था, इसलिए उसने उसे बड़े लाड-प्यार से पाला। वह पच्चीस साल की उम्र का हो गया, पर अब भी कोई काम करना नहीं जानता था। वह पढ़-लिख भी नहीं पाया।

सरस्वती चिड़चिड़े स्वभाव की थी। जब देखो, नाराज़ रहती थी। पड़ोसियों से उसका व्यवहार भी बड़ा ही रूखा-सूखा होता था। छोटी -सी बात भी उसे पसंद न आये तो वह उनपर टूट पड़ती थी, मुँह में जो आये, बक देती थी। साथ ही किफायत के नाम पर कंजूसी दिखाती थी।

इस वजह से, हालांकि उसकी थोडी-बहुत जायदाद थी, फिर भी सदानंद से अपनी लड़की की शादी कराने कोई भी पिता तैयार नहीं होता था। आखिर अपने गाँव से दूर एक और गाँव की ग़रीब लड़की से उसने बेटे की शादी करायी।

नयी-नयी ससुराल आयी बहू भवानी शुरू में ही अपनी सास का स्वभाव भली-भांति जान गयी। सरस्वती भवानी से ही सब काम करवाती थी। कभी-कभी बहू के बारे में शिकायत भी करती रहती थी कि वह घर का काम ठीक तरह से कर नहीं रही है। उसे खरी-खोटी भी सुनाती।

सदानंद को मालूम था कि उसकी माँ उसकी पत्नी के साथ नौकरानी से भी बदतर बरताव कर रही है, पर डर के मारे वह चुप रहता था। उधर सरस्वती को इस बात का भय था कि अगर बहू को न सताऊँ, उससे काम न निकालूँ तो हो सकता है, वह अपने पति को अपने चंगुल में फंसा ले और उसपर हुक्म चलाना शुरू कर दे।

यों दिन बीतते जा रहे थे। शीतकाल में घर के पिछवाड़े में सेम का पौधा खूब फला-फूला। भवानी सेम बेहद पसंद करती थी। उसकी

पार्वती रघुराम

तरकारी खाने में उसे बड़ा मज़ा आता था। परंतु सरस्वती सेम की तरकारी उतना ही बनाती थी, जितना उसे और उसके बेटे के लिए पर्याप्त हो। बहू के लिए एक टुकड़ा भी नहीं छोड़ती थी।

हाल ही में सरस्वती की बहन के बेटे की शादी पक्की हुई। उसे इस शादी में ज़रूर हाजिर होना था। जाने के पहले उसने अपनी बहू को बुलाकर कहा, ''देखो, सब सेमों को तोड़ना और थैली में सुरक्षित रखना। जब लौटूँगी, हाट में जाकर उन्हें बेच दूँगी। एक भी कम पड़ा तो तुम्हारी ख़ैर नहीं।'' उसे यों सावधान करने के बाद बेटे को लेकर बहन के यहाँ जाने निकल पड़ी।

सास और पति के चले जाते ही भवानी ने सारे के सारे सेम तोड डाले। उनके वापस आने तक वह हर रोज उनकी तरकारी बनाती और पेट भर खाती। सेम की तरकारी उसे कितनी ही स्वादिष्ट लगती थी। चौथे दिन की रात को जब सरस्वती लौटी तो उसने देखा कि थैली में मुट्ठी भर ही सेम बची है। वह आग बबूला हो गयी और बेटे को बुलाकर कहा, ''तुम्हारी पत्नी चोरनी है। आज उसने सेमों की चोरी की। पता नहीं, कल क्या चोरी कर बैठे। शायद घर की सभी क़ीमती चीज़ों की चोरी कर ले। इसे किसी भी हालत में घर में रहने देना नहीं चाहिये। यह तो साँप को दूध पिलाना हुआ। अभी इसे यहाँ से ले जाओ और गाँव की सरहद पर की देवी के मंदिर के पास छोड़ आओ। वह इस कड़ी सर्दी में भी बच जाए तो कल क्या करना है, देख लेंगे।''

सदानंद ने माँ को समझाने की कोशिश की, पर उसके तप्त चेहरे को देखकर चुप रह गया। भवानी को साथ लेकर गया और देवी के मंदिर के पास छोड़ आया। बेचारे को अपने इस काम पर बड़ा ही दुख हो रहा था।

पंद्रह मिनट भी नहीं हुए, भवानी उस कडाके की सर्दी सह नहीं सकी। भवानी को मालूम था कि पास ही में देवी का एक उजडा मंदिर स्थित है, जिसकी कोई पूजा नहीं हो रही है। सर्दी से बचने के लिए वह मंदिर में गयी। इतने में किसी के पैरों की आहट सुनायी पडी तो वह तुरंत देवी की मूर्ति के पीछे छिप गयी।

धीरे-धीरे बोलते हुए, चार चोर वहाँ आये और गर्भगृह के सामने बैठकर चोरी के गहनों को आपस में बाँटने को लेकर वाद-विवाद करने लगे।

एक चोर ने आधे गहने ले लिये और कहा, ''यह मेरे हिस्से का है।'' ''ऐसा कैसे हो सकता है? तीसरा हिस्सा मुझे मिलना चाहिये,'' एक और चोर ने कहा।

''चारों को बराबर का हिस्सा मिलना चाहिये।'' एक और ने कड़े स्वर में कहा।

भवानी यह सब सुन रही थी। उसे लगा, मानों उसपर देवी सवार हो गयी हो। वह कहने लगी, ''फिर मेरा हिस्सा कहाँ? सावधान, गले काटकर लहू पी जाऊँगी।'' बस, दूसरे ही क्षण चोर यह कहते हुए भागने लगे, ''देवी क्रोधित हो गयीं।''

भवानी ने दुस्साहस का काम किया। उसे लगा कि उसका यह काम बड़े ख़तरे का है। उसे यह सपना-सा लगा। जो हुआ, अच्छा ही हुआ, समझकर उसने वे गहने पहन लिये। उसने सोच भी लिया कि सास को क्या जवाब दूँ। वह सबेरा होते-होते घर लौट आयी।

उस समय सरस्वती घर के सामने पानी छिड़क रही थी। भवानी को देखकर वह अवाक् रह गयी और फिर अपने को संभालती हुई बोली, ''कौन हो तुम? भवानी ही हो न? मैंने बचपन में मंदिर की कामाक्षी देवी को देखा था। तुम बिलकुल वही लग रही हो।''

सास को चकित देखकर भवानी मुस्कुराती हुई बोली, ''सासू, कामाक्षी देवी की कृपा से ही ये सारे गहने मंदिर में मिले। सर्दी और अंधेरे की वजह से मैं देवी की मूर्ति के पीछे छिप गयी। थोड़ी ही देर में पूरा मंदिर प्रकाश से जगमगा उठा। दो सुहागिन स्त्रियाँ प्रत्यक्ष हुईं और उन गहनों को मुझे देते हुए कहने लगीं, ''हम देवीजी की सेविकाएँ हैं। ये गहने तेरे ही हैं। देवीजी का प्रसाद समझो।'' कहती हुई गहने मेरे सामने रख दिये और अदृश्य हो गयीं। मैं जब आश्चर्य भरे नेत्रों से इन गहनों को देखने लगी तब देवी ने धीमे स्वर में मेरे कानों में कहा, ''भवानी, दुनिया में सब अनर्थों का मूल गरीबी है। तुमने एक गरीब परिवार में जन्म लिया, इसलिए तुम्हें इतने कष्ट झेलते पड़े। किसने तुमसे क्या कहा, क्या कोसा, सब जानती हूँ। तुम्हारी सास नाराज़ी छोड़ दे, अच्छे स्वभाव की बन जाए तो जिस प्रकार से मैंने तुम पर करुणा दिखायी, उसपर भी करुणा दिखाऊँगी।'' बड़ी चालाकी से उसने यों कहा।

भवानी ने जैसे ही यों कहा, सरस्वती को लगा

कि उसे भी देवी के मंदिर में जाना है और ऐसे ही गहने प्राप्त करने हैं। उस रात को अंधेरा छा जाने के बाद वह देवी के मंदिर में गयी। दोनों हाथ उठाकर प्रणाम करती हुई बोली, ''माँ, आज से अपना क्रोध छोड़ देती हूँ। मैं भी कोई संपन्न स्त्री नहीं हूँ। जिस प्रकार से मेरी बहू पर दया दिखायी, उसी प्रकार मुझे भी गहने देना।''

सरस्वती कुछ और कहे, इसके पहले ही बाहर किसी के आने की आहट हुई। सरस्वती ने भांप लिया कि कोई अंदर आने ही वाला है। वह मूर्ति के पीछे छिप गयी। ये वही चोर थे, जो कल रात को आये थे। वे इसका फैसला करने आये कि वह देवी माँ का कंठस्वर है या नहीं।

चोरों में से एक ने देवी को नमस्कार करते हुए कहा, ''माँ, हम पेशे से चोर नहीं हैं। जीने के लिए ऐसी छोटी-मोटी चोरियाँ करते रहते हैं। कल ही की तरह गहनों को बाँटने के लिए आपकी शरण में आये हैं। तुम चाहती हो कि आगे से हम चोरियाँ न करें तो जोर से ऊँचे स्वर में कहना।''

सरस्वती ने फौरन ऊँचे स्वर में कहा, ''अरे, गहने वहीं छोड दो और चलते बनो। ऐसा नहीं किया तो तुम सबको खा जाऊँगी।''

एक चोर ने परिवर्तित कंठस्वर को पहचाना और मूर्ति के पीछे गया। वहाँ उसने सरस्वती को देखा। वह अपने क्रोध पर काबू न पा सका। उसने सरस्वती के दोनों हाथ पकड़ लिये और खींचता हुआ बाहर ले आया। भयभीत सरस्वती ने बहू के लाये गहनों के बारे में बता दिया।

जो गहने खो दिये, उन्हें फिर से पाने चोर सरस्वती को लेकर उसके घर आये। भवानी ने पहले से ही अनुमान लगाया था कि सास कुछ ऐसा ही करेंगी, इसलिए ज़मींदार के नौकरों को वहाँ बुलवा लिया। नौकरों ने चोरों को पकड़ लिया और भवानी से उन गहनों को ले लिया।

भवानी के चातुर्य, सामयिक स्फूर्ति तथा ईमानदारी से प्रसन्न ज़मींदार ने उसे कितनी ही भेंटें दीं। उसके पति को दिवान में नौकरी भी दिलवायी। उस दिन से सरस्वती भूलकर भी कोई बात बहू के खिलाफ़ कहती नहीं थी। वह सगी बेटी की तरह उसकी देखभाल करने लगी।

चन्दामामा प्रश्नावली-३

Co-sponsored by
Infosys FOUNDATION,
Bangalore

जो सही उत्तर देंगे,
उनमें से एक को २५० रुपये
दिये जायेंगे।*

*सही उत्तर देनेवाले एक से अगर अधिक हों तो पुरस्कार की रक़म ड्रा द्वारा निकाले गये सही उत्तर देनेवाले पाँच लोगों में समान रूप से बाँटी जायेगी।

इस प्रश्नावली में जो भी प्रश्न पूछे गये हैं, वे सबके सब जनवरी व दिसंबर २००५ के बीच में चन्दामामा के अंकों में प्रकाशित कहानियों व शीर्षकों में से लिये गये हैं, जिन्हें आप पढ़ चुके हैं। वे यदि याद हों तो इन सबके उत्तर आप तुरंत बता सकेंगे। यदि याद नहीं हों तो बारहों अंकों को सामने रख लें और पन्ने पलटें तो उन्हें आसानी से जान जायेंगे। अवश्य ही बड़ा मज़ा आयेगा।

आपको यह करना है: १. उत्तर लिखिये, २. अपना नाम और उम्र (१६ वर्ष की उम्र के अंदर होना आवश्यक है); पिनकोड सहित सही पता हो, ३. अभिदाता हों तो वह संख्या लिखिये, ४. लिफ़ाफ़े पर **चन्दामामा प्रश्नावली-३** लिखें और उसे चन्दामामा के पूरे पते पर हमें भेजिये, ५. अप्रैल महीने के अंत तक आपकी प्रविष्टि हमें मिल जानी चाहिये, ६. जून महीने के अंक में परिणाम प्रकाशित किये जायेंगे।

१. ग्यारहवें साल की उम्र तक वह सबके जैसा था। इसके बाद आठ सालों तक वह बड़ी तेज़ी से बढ़ा। उसकी अमित लंबाई ने उसे नाना प्रकार के कष्टों में फंसाया। उसका नाम क्या है?

२. गुलाम वंश का स्थापक कौन था?

३. "मूर्ख ऐसे हाथी को ही नहीं, किसी भी प्रकार की मूल्यवान वस्तु को खो बैठते हैं। मूर्ख अपना अविवेक अन्यों के सामने स्वयं प्रकट करते हैं" महावत के ये शब्द किस कहानी में हैं?

४. वह राजकुमार कौन था, जिसने अपनी ज्ञान संपदा के बल पर अपने दोनों भाइयों को जल राक्षसी से बचाया?

५. जैन धर्म की दो शाखाएँ कौन-सी हैं?

६. जोराष्ट्रियों के प्रार्थना स्थल का क्या नाम है?

७. सुप्रसिद्ध भारतीय चित्रकार एम.एफ.हुस्सेन को पारितोषिक के रूप में १०१ करोड़ रुपये पहले ही दिये गये और उन्हें १०० चित्रों के चित्रांकन का भार सौंपा गया। मुंबई के एक व्यापारी ने यह पहल ली। क्या आप उनका नाम जानते हैं?

८. यह चित्र किस कहानी का है?

मूल्य-मूल्य की बात

आपने मकदूनिया के राजा फिलिप के बारे में पढ़ा है और उससे भी प्रसिद्ध उसके बेटे सिकन्दर महान के बारे में भी। सिकन्दर बहुत छोटी उम्र में ईसा पूर्व सन् ३३६ ईसवी में सिंहासन पर बैठा और शीघ्र ही देशों तथा महादेशों को जीतने के लिए निकल पड़ा। उसने फारस और मिस्र को जीत लिया और भारत पर आक्रमण कर दिया।

लेकिन महान दार्शनिक अरस्तू का शिष्य होने के कारण उसका सारा ध्यान युद्ध और जीत पर नहीं था। वह विद्वानों और पंडितों से मिलने के लिए ललकता रहता था। एथेन्स नगर के निकट डायोजिनिस नाम का एक दार्शनिक रहता था। वह एक टब में रहता था। वह अहंकारी और शक्तिशाली व्यक्तियों का उपहास किया करता था और कटुता के लिए प्रसिद्ध था। लेकिन उसकी हाजिरजवाबी और बुद्धिमानी पर बहुत लोग मुग्ध थे।

एक दिन सिकन्दर उस दार्शनिक से मिला और उससे उसने कुछ प्रश्न पूछे। डायोजिनिस ने उनके उत्तर दिये। उससे प्रभावित होकर सिकन्दर ने उसे इनाम में धन-दौलत, महल या उसकी मनोवांछित कुछ भी चीज़ देने का निश्चय किया। उसे उस महान दार्शनिक पर दया आ गई जिसके पास सिर छिपाने की छत भी नहीं थी।

"बताइये, डायोजिनिस, मैं आप के लिए क्या कर सकता हूँ?" शक्तिशाली राजा ने पूछा। दार्शनिक ने उत्तर नहीं दिया। "शायद वह सोच रहा हो कि कितना धन माँगे" - राजा ने अनुमान लगाया और उसकी माँग सुनने के लिए इन्तज़ार किया। लेकिन वह मनीषी मौन रहा। जब राजा ने अपना प्रश्न दुहराया तब दार्शनिक ने धीमे से कहा, "आप सूरज की रोशनी को रोक रहे हैं। क्या आप थोड़ा हट जायेंगे जिससे मुझे कुछ धूप मिल सके।"

राजा के पीछे खड़े लोगों को पूरा विश्वास था कि राजा पंडित की गुस्ताखी पर उसे सज़ा देगा। लेकिन राजा चुपचाप खिसक गया और अपने साथियों से बोला, "यदि मैं सिकन्दर न होता तो डायोजिनिस बनना पसन्द करता।"

डायोजिनिस का एक गरीब प्रशंसक अपना भोजन दार्शनिक के साथ बाँट कर खाता था। कहने की जरूरत नहीं कि वह गरीब आदमी का मामूली खाना होता था। एक दिन अरिस्टिपस नाम का एक दूसरा प्रसिद्ध दार्शनिक, जो एथेन्स के राजा के संरक्षण में आराम की जिन्दगी गुजार रहा था, डायोजिनिस को दलिया खाते देख कर बोला, "मेरे दोस्त, यदि तुम केवल राजा को खुश करना जान जाते, तब तुम्हें दलिया खाकर गुजारा करना नहीं पड़ता!"

"मेरे दोस्त, यदि तुम केवल यह जान पाते कि दलिया खाकर कैसे जिन्दा रहा जा सकता है, तब तुम्हें राजा की खुशामद नहीं करनी पड़ती।" डायोजिनिस ने चुटकी लेते हुए पट जवाब दिया।

(एम.डी.)

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता-१ (फरवरी २००६) के विजेताओं को बधाई

१. *रामू टोपले,*
हिवरा सेनाद्वार,
पनधुरना,
छिन्दवाड़ा,
मध्य प्रदेश - ४८० ३३७

२. *गीता कुमारी,*
मयद. श्री मनोरंजन प्रसाद श्रीवास्तव,
तरी मुहल्ला, पो. आरा,
जि. भोजपुर,
बिहार - ८०२३०१.

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता-१ के उत्तर :

१. मुंबई में स्थित छत्रपति शिवाजी टर्मिनस
२. अजीब सपना
३. ताजमहल
४. कलरिपयट्टु, बोधिधर्म
५. इसी बगीचे में लाल गुलाब
६. राजकुमार और पत्थर के खम्भे

बदनसीब

सारंगधर राज्य में, आंजनेय शर्मा नामक एक दैवज्ञ ज्योतिषी रहा करता था। जन्म कुंडली बताने में उसकी बराबरी का कोई नहीं था। पास के गाँवों से कितने ही लोग उससे अपनी जन्म कुंडलियों के बारे में जानकारी पाते थे।

शर्मा ने एक दिन फ़ुरसत के समय उस राज्य के शासक विक्रम की जन्म कुंडली देखी। हिसाब लगाया। तालपत्रों का गहराई से परिशीलन किया। जिस किसी भी दृष्टिकोण से देखा जाए, राजा की जन्म कुंडली अच्छी नहीं लग रही थी।

विक्रम अपने सुशासन के लिए सुप्रसिद्ध था। शासन चलाने में वह पटु था। जनता की आवश्यकताओं की वह जानकारी प्राप्त करता था और उनके पूछे बिना ही उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करता था। उत्तराधिकारी राजकुमार अभी बालक ही था।

शर्मा को लगा कि उस देश का नागरिक होते हुए उसका यह फ़र्ज़ बनता है कि वह राजा को यह सूचित करे और उसे विपत्ति से बचाये। उसने समझा कि ऐसा न करना राजद्रोह है। इसलिए वह घोड़े पर सवार हो राजधानी जाने निकला।

तीन दिनों की यात्रा के बाद, आंजनेय शर्मा राजप्रासाद पहुँच पाया। लेकिन वहाँ के द्वारपालकों ने उसे अंदर प्रवेश करने से रोका।

''मैं आंजनेय शर्मा नामक ज्योतिषी हूँ। राजा से मेरा मिलना बहुत ज़रूरी है। फौरन उनके दर्शन करना होगा।'' द्वारपालकों से उसने बिनती की।

''आप हमें पहले बताइये कि वह कौन-सा काम है, तभी राजा के दर्शन की हम अनुमति दे सकेंगे।'' द्वारपालकों ने कहा।

''वह काम बड़े ही रहस्य का है। केवल राजा को ही बता सकता हूँ।'' आंजनेय शर्मा ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

इतने में सेनाधिपति वहाँ आया और

''वियोगी''

आंजनेय शर्मा को देखते हुए द्वारपालकों से पूछा, ''यह कौन है? इनका पहनावा बड़ा अजीब है।''

द्वारपालकों ने, जो हुआ, उसका विवरण दे दिया। सेनाधिपति ने शर्मा को ध्यान से देखकर कहा, ''शर्मा, जिस काम पर आये हो, उसके बारे में सबके सामने कहने से तुम्हें कोई आपत्ति हो तो मेरे कान में कह देना।''

आंजनेय शर्मा ने ज़ोर देते हुए कहा, ''क्षमा कीजिये। यह विषय केवल राजा को ही बता सकता हूँ, क्योंकि यह रहस्य-भरा विषय है।''

''मैं राजा का सेनाधिपति हूँ। ऐसे कोई रहस्य नहीं होते, जिनकी मुझे जानकारी नहीं होती। वह रहस्य मुझे बता सकते हो।'' सेनाधिपति ने गंभीर स्वर में कहा।

आंजनेय शर्मा ने धीरे से सेनाधिपति के कान में कुछ कहा। यह सुनते ही वह चौंक उठा और पूछा, ''यह तुम्हें कैसे मालूम है?''

''यह शास्त्र है, शास्त्र,'' शर्मा ने कहा।

''तुम यहीं रहो। अनुमति माँगकर अभी लौटूँगा,'' कहते हुए सेनाधिपति भवन के अंदर गया और ज्योतिषी की बात मंत्री के कान में बतायी। मंत्री घबरा गया।

''क्या राजा को यह विषय बता दिया जाए?'' सेनाधिपति ने बेसब्री से पूछा।

''बिलकुल नहीं,'' शर्मा को पहले जेल में ठूँसो। उससे पूरी बात उगलवायेंगे।'' मंत्री ने आज्ञा दी।

बेचारा आंजनेय शर्मा राजा के दर्शन की

प्रतीक्षा में था। वह सपने देख रहा था कि यह विषय सुनते ही राजा उसका सम्मान करेंगे, ढेर सारी भेंटें देंगे। परंतु सैनिकों ने उसे जेल में डाल दिया। शर्मा उनसे गिडगिडा रहा था, पर उन्होंने उसकी एक न सुनी और पूछते रहे, ''बोल, यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ? तेरे साथ और कितने राजद्रोही हैं?'' वे उसे तरह-तरह से सताने लगे।

एक घंटे के बाद सेनाधिपति, आंजनेय शर्मा को देखने आया। उसे देखते ही शर्मा ने ज़ोर से रोते हुए कहा, ''मेरी यह दुर्गति कैसी? राजा को विपत्ति से छुटकारा दिलाने आया तो आप लोगों ने मुझे ही फंसा दिया। मैंने राजा की जन्म कुंडली देखकर बहुत बड़ी ग़लती की। मुझे चुप रहना था। अब मेरी अक़्ल ठिकाने आ गयी। प्रभु, अगर आप मुझे रिहा कर देंगे तो इसी क्षण गाँव लौट

जाऊँगा। यह सब मेरा दुर्भाग्य है, जिसका जिम्मेदार मैं खुद हूँ।''

''देखो शर्मा, व्यर्थ ही कर्म सिद्धांत दोहराते मत रहना। बताना कि असल में तुम्हारे राजद्रोहियों के गिरोह में कुल कितने हैं? क्या-क्या व्यूह रचनाएँ कीं। तुरंत बता दे।'' सेनाधिपति ने क्रोध-भरे स्वर में कहा।

''महोदाय, मेरा विश्वास कीजिये। मैंने कोई पाप नहीं किया। मुझसे कोई ग़लती नहीं हुई। राजद्रोही नहीं हूँ।'' दोनों हाथ उठाकर नमस्कार करते हुए उसने दीन स्वर में कहा।

सेनाधिपति को शर्मा की बातों का विश्वास नहीं हुआ। उसने सैनिकों को आदेश दिया। ''जब तक यह सच नहीं बताता, तब तक इसे ख़ूब मारो, पीटो और सच उगलवाओ।''

दूसरे दिन सारंगधर राजा विक्रम जब राजप्रासाद के बाहर टहल रहा था, तब किसी अपरिचित ने उसपर बाण चलाया और भाग गया। राजा स्वर्गवासी हो गया।

राजा की मृत्यु की ख़बर मिलते ही आस्थान ज्योतिषी ने मंत्री से बताया, ''राजा की जन्म कुंडली में यह स्पष्ट है कि जो राजा को खतरे से बचाना चाहते हैं, उनकी भी मृत्यु होकर रहेगी। यह मैं जानता था, पर सोचने लगा कि राजा को कैसे सावधान करूँ। इतने में यह दुर्घटना घटी।''

मंत्री ने चिंतित होते हुए कहा, ''आंजनेय शर्मा महान राजभक्त है। हमने उसकी भविष्यवाणी पर विश्वास नहीं किया। वह राजा को बचाना चाहता था। लेकिन यह जाने बिना हमने उसे बहुत सताया। उसका सम्मान करना हमारा प्रथम कर्तव्य है।'' फिर सेनाधिपति को बुलवाया और आंजनेय शर्मा को हाज़िर करने की आज्ञा दी।

सेनाधिपति जेल में गया। आधे घंटे के बाद लौटकर कहा, ''मंत्रिवर, आंजनेय शर्मा अब नहीं रहे। दिल का दौरा पड़ने के कारण उनकी अकाल मृत्यु हुई। महाराज के मरने के पहले ही वे मर गये। बेचारे ने महाराज की जन्म कुंडली देखी, पर अपनी जन्म कुंडली देखना भूल गये।''

धोखे की सज़ा

प्राचीनकाल में काशी राज्य पर राजा ब्रह्मदत्त राज्य करते थे। उनके यहाँ पिंगल नामक एक पुरोहित था। उसकी देह की छाया पिंगल वर्ण थी, उसका सिर गंजा था, उसका मुँह पोपला था। उस समय बोधिसत्व नक्कारिय नाम से पिंगल के यहाँ विद्याभ्यास किया करता था।

राज पुरोहित पिंगल के एक साला था। उसका भी वर्ण पिंगल था, सिर गंजा था और मुँह पोपला। वह भी पिंगल के समान प्रतिभा रखता था। बहनोई और साला अपने को एक दूसरे से बड़ा मानते थे, इस कारण दोनों के बीच गहरी दुश्मनी थी। पिंगल ने अपने साले को नीचा दिखाने की कई बार कोशिश की, लेकिन उसे सफलता न मिली।

आख़िर पिंगल ने अपने साले को मार डालने की योजना बनाई। उसने राजा के यहाँ जाकर निवेदन किया, ''महाराज, हमारा काशी नगर सारे भारत में श्रेष्ठ है। आप देश के समस्त राजाओं में महान हैं। ऐसी हालत में हमारे दुर्ग के निर्माण में दोष का होना चिंताजनक है। हमारे क़िले के दक्षिणी द्वार के निर्माण में गलती रह गई है। यह हमारे लिए अमंगलकारी है। उसकी वज़ह से देश में हमारा अपयश भी हो सकता है! इसलिए उस दोष को यथाशीघ्र दूर करना चाहिए।''

''इसके वास्ते हमें क्या करना होगा?'' राजा ने पिंगल से पूछा।

''उस द्वार को पहले गिराना होगा! इसके बाद शुभदायक लकड़ी लाकर एक और द्वार बनवाना पड़ेगा। फिर नगर देवियों को बलि चढ़ाकर एक शुभ मुहूर्त में नये द्वार को खड़ा करना होगा।'' पिंगल ने सुझाया।

राजा ने पिंगल के सुझाव को मान लिया। उनकी आज्ञा लेकर पिंगल ने दक्षिणी द्वार को तुड़वा दिया। उसकी जगह बिठाने के लिए नया द्वार जल्द तैयार कराया गया।

इस पर पिंगल ने राजा के पास जाकर बिनयपूर्बक कहा, ''महाराज, नया द्वार तैयार हो

गया है! उसे स्थापित करने के लिए कल एक बढ़िया मुहूर्त है। उसके लिए आवश्यक बलि देकर द्वार को स्थापित करने की अनुमति दीजिए!''

''बलि चढ़ाने के लिए क्या-क्या इंतजाम करना होगा?'' राजा ने पूछा।

''महाराज, पिंगल बर्ण, गँजा सिर और पोपले मुँहवाले एक ब्राह्मण की बलि चढ़ानी होगी। इस द्वार की रक्षा करनेवाली महती शक्तियों को ऐसे ब्राह्मण के रक्त और माँस के द्वारा संतुष्ट करना होगा। इसके बाद उस ब्राह्मण को वहीं पर गाड़कर उसी जगह नये द्वार को खड़ा करना होगा।'' पिंगल ने समझाया।

''अच्छी बात है! ऐसे ब्राह्मण की खोज करके मंगवा लो और द्वार खड़ा करवा दो।'' राजा ने अनुमति दी। पिंगल यह सोचकर फूला न समाया कि उसके प्रबल शत्रु साले को ख़त्म करने के लिए राजा की अनुमति मिल गई है।

फिर वह घर पहुँचकर अपनी पत्नी से बोला, ''सुनो, कल तक तुम्हारे भाई की आयु समाप्त होने वाली है। देखती रहो, कल मैं उसे नये द्वार की बलि चढ़ाने जा रहा हूँ।'' यों उसने निडरता के साथ डींग मारी।

''मेरे भाई की ही बलि क्यों चढ़ानी है? इसे राजा ने कैसे मान लिया है?'' पिंगल की पत्नी ने पूछा।

''मैंने राजा से यह थोड़े ही बताया है कि अमुक आदमी की बलि दूँगा? मैंने सिर्फ़ यही बताया कि पिंगल वर्ण और पोपले मुँह वाला ब्राह्मण

चाहिए। राजा ने मान लिया। कल मैं राजा को तुम्हारे भाई को दिखाकर सलाह दूँगा कि यह आदमी बलि चढ़ाने के लिए उपयुक्त होगा। मेरी बात को कौन इनकार करेगा?'' पिंगल ने कहा।

इसके बाद पिंगल की पत्नी ने अपने पति के साथ कोई वाद-विवाद नहीं किया। गुप्त रूप से अपने भाई के पास सारा समाचार पहुँचा कर उसे आगाह कर दिया कि वह यदि अपने प्राण बचाना चाहता है तो सवेरे के अन्दर उस नगर को छोड़कर कहीं चला जाये।

जब पिंगल के साले को उसे मार डालने के षड्यंत्र का पता चला, तब उसने अपने ही जैसे वर्ण, पोपले मुँह व गँजा सिरवाले दो और आदमियों को मिलाकर उसी रात को नगर छोड़ चला गया।

दूसरे दिन सवेरे पिंगल ने राजा के पास जाकर कहा, ''महाराज, बलि के लिए आवश्यक आदमी अमुक जगह होगा। आप कृपया उसको यहाँ पर बुलवा दीजिए।''

राजा ने पिंगल के द्वारा सुझाये गये उस आदमी को लिवा लाने के लिए अपने नौकरों को भेजा। नौकरों ने लौटकर बताया कि उस जगह रहने वाला आदमी कल रात को ही इस देश को छोड़ कहीं चला गया है।

नौकरों से यह समाचार पाकर राजा ने कहा, ''अब क्या किया जाये? ऐसे लक्षण वाले ब्राह्मण को किसी तरह से ढूँढ लाना पड़ेगा।''

इस पर मंत्रियों ने सालाह दी, ''महाराज, यह कौन बड़ी भारी समस्या है? हमारे पुरोहित के

अंदर ये सारे लक्षण हैं। उन्हीं की बलि चढ़वा दीजिए।''

''ऐसा भी किया जा सकता है। लेकिन इसके बाद मुझे पुरोहित चाहिए न? क्या इसके समान योग्य कोई आदमी है? यह बात भी पुरोहित की बलि चढ़ाने के पहले सोच लीजिए!'' राजा ने सुझाया।

''हमारे पुरोहित के पास तक्कारिय नामक एक शिष्य है। वह अपने गुरु से भी कहीं ज़्यादा अक़्लमंद और बुद्धिमान है। उसको आप अपना पुरोहित नियुक्त कर सकते हैं।'' मंत्रियों ने सलाह दी।

दूसरे ही क्षण राजा ने तक्कारिय को बुलवा भेजा और कहा, ''तुमको आज से राज पुरोहित नियुक्त करता हूँ। तुम इस पिंगल की शास्त्र-विधि से बलि चढ़ाकर उसे गड़वा दो और उसकी क़ब्र पर ही द्वार रखवा दो।''

इस पर तक्कारिय दक्षिणी द्वार के पास पहुँचा, पिंगल को यज्ञ - पशु के रूप में अलंकृत करके उसके हाथ-पैर बंधवा दिये और नये द्वार के पास पहुँचवा दिया। जहाँ पर बलि चढ़ाने के लिए द्वार स्थापित होना था, वहाँ पर एक गहरा गड्ढा खोदा गया था। उस गड्ढे में गुरु और शिष्य दोनों पहुँचे। उस वक़्त पिंगल दहाड़ मारकर रोते हुए बोला, ''अरे शिष्य! किसी दूसरे के लिए खोदे गये गड्ढे में मैं स्वयं ही पहुँच गया हूँ।''

''गुरुदेव! जो आदमी जान-बूझकर दूसरों की हानि करने की सोचता है, उसे कभी न कभी अपने हाथों खोदे गये गड्ढे में गिरना ही पड़ेगा। आप चिंता न कीजिए। मैं राजा के पास पहुँच कर बता दूँगा कि आधी रात तक कोई बढ़िया मुहूर्त नहीं है। इसके बाद फिर कोई न कोई उपाय करके आपके प्राण बचा लूँगा!'' तक्कारिय ने समझाया।

उसने अपने कहे अनुसार बलि का मुहूर्त आधी रात के लिए बदलवा दिया। उस दिन रात को अंधेरे में पिंगल को उस देश को छोड़ भाग जाने की सलाह दी और उसकी जगह एक मृत बकरी को लाकर गड्ढे में गड़वा दिया और सवेरा होने के पहले ही वहाँ पर नये द्वार को प्रतिष्ठित करवा दिया।

रामायण

राम, लक्ष्मण को साथ लेकर, विश्वामित्र, ईशान्य दिशा की ओर गये। वे उस जगह पहुँचे जहाँ महाराजा जनक यज्ञ कर रहे थे। यज्ञशाला के चारों ओर ऋषियों के निवास थे। विश्वामित्र ने भी अपने लिए एक जगह रहने की व्यवस्था की।

इस बीच महाराजा जनक को पता लगा कि विश्वामित्र आये हुए हैं। वे अपने पुरोहित शतानन्द के साथ आये। उन्होंने अर्घ्य आदि से विश्वामित्र की पूजा की।

महाराजा जनक ने विश्वामित्र से कहा कि उनका यज्ञ पूरा होने में अभी बारह दिन हैं। राम और लक्ष्मण को देखकर उन्होंने पूछा, ''ये राजकुमार कौन हैं? किनके लड़के हैं?''

विश्वामित्र ने जनक से राम और लक्ष्मण का परिचय करवाया, ''आपके पास जो धनुष है, उस पर बाण चढ़ाना सम्भव है कि नहीं, यह देखने के लिए मुख्यतः ये बच्चे यहाँ आये हैं।''

जनक का पुरोहित, शतानन्द, अहल्या और गौतम का बड़ा लड़का था। शतानन्द को यह जान बड़ी खुशी हुई कि राम के कारण उसकी माता शाप मुक्त हो गई है और उसके पिता, जिन्होंने उसको शाप दिया था, आश्रम में वापस आ गये हैं।

उसने राम की ओर मुड़कर कहा, ''आप विश्वामित्र का अनुग्रह प्राप्त करके धन्य हैं। इस महापुरुष का जीवन वृत्तान्त सुनाता हूँ, सुनिये। वहाँ उपस्थित लोगों के समक्ष वह विश्वामित्र का जीवन वृत्तान्त यों सुनाने लगाः

ब्रह्मा के कुश नाम का लड़का हुआ। उसके कुशनाभ नाम का पुत्र हुआ। कुशनाभ के लड़के गाधि के लड़के विश्वामित्र थे। उन्होंने बहुत समय

तक राज्य किया। उस समय एक अक्षौहिणी सेना लेकर पर्यटन करते करते वे महामुनि बसिष्ठ के आश्रम में पहुँचे। उस आश्रम में कितने ही तपस्वी थे। वह आश्रम ब्रह्मलोक का एक भाग-सा प्रतीत होता था।

आश्रम में आये हुए विश्वामित्र आदि का, बसिष्ठ ने आतिथ्य-सत्कार किया। दोनों ने एक-दूसरे से कुशल प्रश्न किये। थोड़ी देर तक इधर उधर की बातें होती रहीं। फिर वसिष्ठ ने कहा कि विश्वामित्र और उनके साथ आये हुए सैनिकों को सहभोज देंगे।

''आपका दर्शन ही हमारे लिए सहभोज है और किसी सहभोज की क्या आवश्यकता है?'' कहते हुए विश्वामित्र वहाँ से चल पड़े।

परन्तु वसिष्ठ ने उनको जाने से रोका। शबल नामक कामधेनु को बुलाकर, उससे कहा, ''भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, पेय के साथ सब के लिए षड्रस भोजन की व्यवस्था करो।'' शबल ने वैसा ही किया।

हजारों व्यक्तियों के लिए नाना प्रकार के स्वादिष्ठ भोजन पल भर में तैयार थे। विश्वामित्र के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उन्होंने सोचा कि मैं समर्थ राजा होकर भी इतने विविध प्रकार के भोजन की इतनी सुन्दर व्यवस्था इतने कम समय में अपने महल में भी नहीं कर सकता। यह तो बियाबान जंगल है। यह तो चमत्कार है। यह कामधेनु दिव्य गौ है। इसे तो मेरे महल में होना चाहिये। विश्वामित्र के मन में लालच आ गया।

''महर्षि, मुझे शबल दिलवाइये। इसके बदले मैं आपको लाख गौवें दूँगा। क्योंकि श्रेष्ठ वस्तुएँ राजा की होती हैं, यह गौ मेरी ही होनी चाहिये।'' उन्होंने कहा।

''आप चाहें सौ करोड़ गौवें दें, मैं शबल नहीं दूँगा। यही तो मेरा धन है। हमारा सारा आश्रम इसी पर निर्भर है।'' वसिष्ठ ने कहा।

विश्वामित्र ने कहा जितना बसिष्ठ सोना माँगेंगे, उतना वे देंगे। जितना हीरा माँगेंगे, उतना देंगे। जैसे भी हो उन्होंने शबल देने के लिए कहा, पर बसिष्ठ ने देने से इनकार कर दिया।

तब विश्वामित्र ने जबर्दस्ती शबल को ले जाने का प्रयत्न किया। शबल रम्भाती आँसू बहाती, बसिष्ठ के पैरों पर आकर गिर पड़ी, ''यह क्या अन्याय है?'' उसने पूछा।

वसिष्ठ ने शवल से कहा, ''विश्वामित्र के पास एक अक्षौहिणी सेना है, मेरे पास बल नहीं है, मैं क्या कर सकता हूँ?''

''आपकी तप:शक्ति के सामने इन विश्वामित्र की क्या शक्ति है? इनकी सेना का संहार करने के लिए मैं सेना की सृष्टि करती हूँ, आज्ञा दीजिये।''

''माता! आप अपनी रक्षा स्वयं कर लीजिये।'' वसिष्ठ ने कामधेनु को अपनी रक्षा स्वयं करने की स्वीकृति दे दी। ऋषि वसिष्ठ का आदेश मिलते ही कामधेनु रम्भाने लगी और उसके शरीर से अनन्त म्लेच्छ पैदा होने लगे और विश्वामित्र की सेना का संहार करने लगे।

विश्वामित्र रथ पर सवार हो गये और जो दिव्यास्त्र उनके पास थे, वे उनका इन पर उपयोग करने लगे। कामधेनु सेना की सृष्टि करती गई। वे विश्वामित्र की सेना को घेरने लगे।

यह देख विश्वामित्र के सौ लड़कों ने शस्त्र लेकर वसिष्ठ पर हमला किया। उनके एक बार हुँकार करने से सौ लड़के वहीं भस्म हो गये। उनकी सारी सेना समाप्त हो गई, विश्वामित्र बड़ा अपमानित हुए। उनकी हालत पंख कटे पक्षी की-सी हो गई।

'धिक्कार है ऐसे क्षात्र तेज को जो ब्रह्म तेज के सामने इतना दुर्बल है। मेरा राजबल, क्षत्रिय बल एक नि:शस्त्र ब्राह्मण के सामने इतना हीन है। तपोबल सैनिक बल से बहुत महान है। मुझे वही चाहिये। मुझे राज्य धर्म नहीं चाहिये।' यह सोच कर वह आत्म ग्लानि से भर गये और जो पुत्र मरने
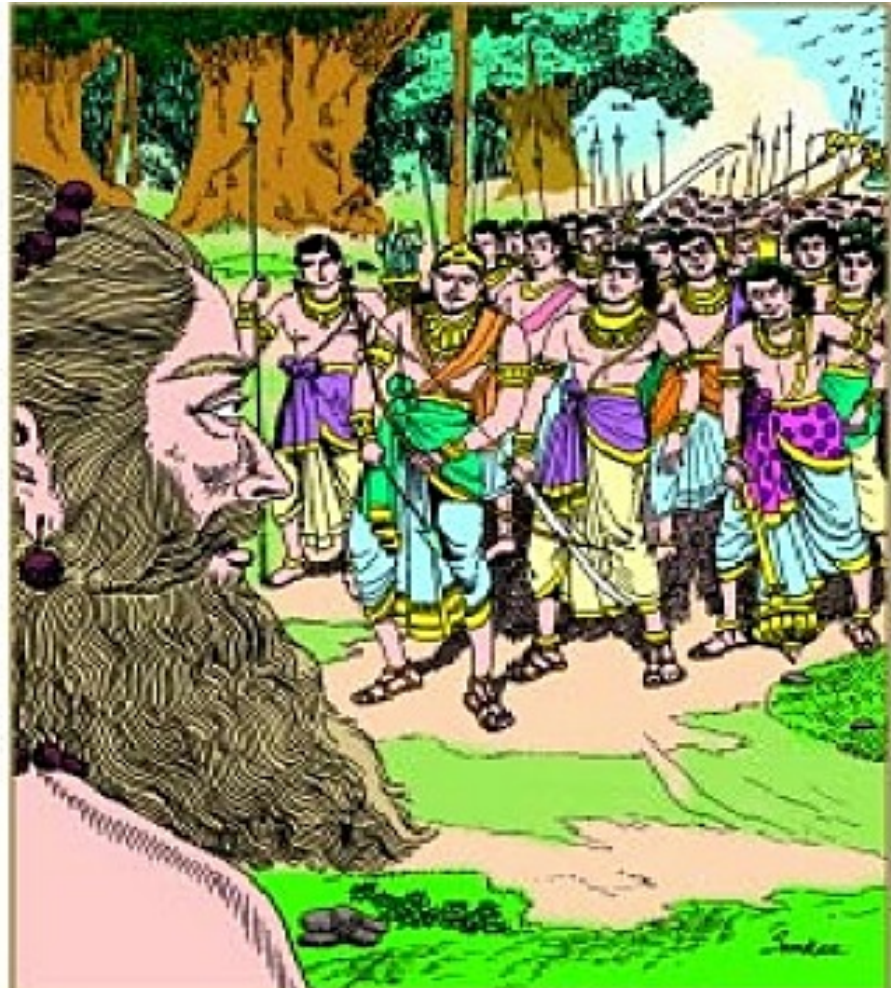
से बच गया था, उस लड़के को राज्य भार सौंपकर वे हिमालय में चले गये और वहाँ शिव की तपस्या करने लगे।

कुछ दिन बाद शिव प्रत्यक्ष हुए। उन्होंने पूछा कि क्या चाहिये। ''मुझे ऐसे अस्त्र दीजिए जिनसे देवता, गन्धर्व, राक्षस आदि सब मेरे अधीन हो सकें। मुझे धनुर्वेद का पूर्ण ज्ञान हो।'' विश्वामित्र ने कहा।

शिव ''तथास्तु'' कहकर अन्तर्धान हो गये।

इन अस्त्रों को लेकर विश्वामित्र वसिष्ठ का नाश करने के लिए उनके आश्रम में गये। उन्होंने आश्रम का दहन प्रारम्भ किया। वहाँ के ऋषि इधर-उधर भागने लगे। पक्षी और पशु भाग निकले। क्षण भर में आश्रम उजड़ गया।

वसिष्ठ क्रुद्ध हो, अपना ब्रह्मदण्ड लेकर

विश्वामित्र के सामने आये। विश्वामित्र ने आग्नेय अस्त्र का उपयोग किया। परन्तु वह ब्रह्मदण्ड को छूते ही ठण्डा पड़ गया।

विश्वामित्र ने कई सैकड़ों अस्त्रों का उपयोग किया, परन्तु वसिष्ठ के ब्रह्मदण्ड ने सब को निगल लिया। वसिष्ठ और उनके ब्रह्मदण्ड से ज्वालायें निकल रही थीं, अंगारे छिटक रहे थे। दूसरे मुनियों ने वसिष्ठ के पास आकर कहा, ''आपने विश्वामित्र को जीत लिया है, अब शान्त हो जाइये।''

'ब्रह्मतेज के सामने क्षत्रिय बल तुच्छ है? मैं तपस्या करके ब्रह्मत्व प्राप्त करूँगा।' यह सोचकर विश्वामित्र पत्नी को लेकर कठिन तपस्या करने के लिए दक्षिण दिशा की ओर निकल पड़े। उस समय उनके हविष्यन्द, मधुस्यन्द, दृढ़नेत्र, और महारथ नाम के चार लड़के हुए।

कुछ समय बाद ब्रह्मा ने प्रत्यक्ष होकर विश्वामित्र से कहा, ''तुम्हारी तपस्या के कारण अब राजाओं का संसार तुम्हारे अधीन है। तुम राजर्षि कहलाये जाओगे।''

राजर्षि उपाधि से विश्वामित्र सन्तुष्ट नहीं हुए। वे तो ब्रह्मर्षि कहलाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने फिर तपस्या प्रारम्भ की।

इसी समय ईक्ष्वाकु वंश के राजा त्रिशंकु ने सशरीर स्वर्ग जाना चाहा। जब उन्होंने इस इच्छा के बारे में अपने कुल गुरु से कहा तो उन्होंने कहा कि यह असम्भव है।

यह सोचकर कि वसिष्ठ के लड़के, जो दक्षिण में रह रहे थे, शायद उसकी सहायता कर सकें, वह उनके पास गया। उन्होंने त्रिशंकु को पहले समझाया कि यह प्रकृति के विधान के विरुद्ध है। स्वर्ग भौतिक लोक नहीं है जहाँ भौतिक शरीर ठहर सके। देव विधान के अन्तर्गत आवश्यक पुण्य अर्जित करने पर ही मनुष्य की आत्मा स्वर्ग का सुख भोग सकती है। जब त्रिशंकु ने उनकी बात नहीं मानी तब उन्होंने क्रुद्ध होकर उसको वापस चले जाने के लिए कहा। इस पर भी त्रिशंकु बाज़ न आया, उसने कहा कि वह किसी और की शरण लेगा। वसिष्ठ के सौंवों लड़कों ने क्रुद्ध होकर उसे शाप दिया कि वह चाण्डाल हो जाये।

शाप के कारण वह काला हो गया। उसके कपड़े भी काले हो गये। उसके गहने भी लोहे के हो गये। वह वसिष्ठ के शत्रु विश्वामित्र के पास गया। विश्वामित्र ने त्रिशंकु का कहना सुनकर कहा,

"मैं तुम्हें इसी शरीर में स्वर्ग पहुँचा दूँगा।" उन्होंने यज्ञ की योजना की और अपने शिष्यों को, ऋषियों को बुलाकर लाने के लिए कहा।

निमन्त्रण पाकर सब आये, पर महोदय और विश्वामित्र के लड़के नहीं आये। जो नहीं आये थे, उनको विश्वामित्र ने शाप दे दिया।

यज्ञ आरम्भ हुआ। परन्तु हवि लेने के लिए देवता नहीं आये। विश्वामित्र क्रुद्ध हो उठे। उन्होंने त्रिशंकु से कहा, "मैंने इतने समय तक जो तपस्या की है, उसके बल पर तुम्हें स्वर्ग भेजूँगा।" सब मुनि देख रहे थे कि त्रिशंकु सशरीर ऊपर उठा और स्वर्ग की ओर चल पड़ा।

परन्तु इन्द्र आदि देवताओं ने त्रिशंकु को स्वर्ग में नहीं आने दिया। उसे नीचे गिरा दिया। त्रिशंकु सिर के बल गिरते हुए चिल्लाया, "महात्मा, रक्षा करो।" विश्वामित्र ने कोप में दक्षिण दिशा में एक और सप्तर्षि मंडल बनाया। कुछ नये ग्रह बनाये। "मैं एक और स्वर्ग और नये देवताओं को बनाऊँगा।" उन्होंने कहा।

तब देवता और ऋषि घबरा गये। उन्होंने विश्वामित्र के पास आकर कहा, "महाशय, शापग्रस्त त्रिशंकु को स्वर्ग में कैसे रखा जा सकता है?"

"मैंने बचन दिया है कि मैं सशरीर इसको स्वर्ग भेजूँगा। वह होकर रहेगा।" विश्वामित्र ने कहा। फिर यों सन्धि हुई कि त्रिशंकु नवनिर्मित नक्षत्रों में हमेशा सिर नीचे किये पड़ा रहे और विश्वामित्र नये देवताओं की सृष्टि न करें।

फिर विश्वामित्र दक्षिण दिशा छोड़कर, पश्चिम की ओर पुष्कर नाम के तपोवन के पास तपस्या करने लगे।

इस बीच अयोध्या में अम्बरीश महाराजा ने एक यज्ञ प्रारम्भ किया और इन्द्र यज्ञ पशु को उठा ले गया। राजपुरोहित ने राजा से कहा कि कुछ भी हो, यज्ञ पशु को खोजना होगा, नहीं तो नर की बलि देनी पड़ेगी। जब अम्बरीश को यज्ञ पशु न मिला, तो वह नर के लिए निकला।

भृग्रातुद नामक पर्वत प्रदेश में ऋचीक नाम का मुनि अपनी पत्नी और बच्चों के साथ रह रहा था। अम्बरीश ने उसके पास जाकर अपनी कहानी सुनाई। ''मैं लाख गौवें दूँगा, तुम अपने लड़कों में से एक को बलि के लिए दो।'' ऋचीक ने कहा कि वह बड़ा लड़का नहीं देगा। उसकी पत्नी ने कहा कि वह अन्तिम लड़का नहीं देगी। मँझले का नाम शुनश्शेप था। उसने राजा से कहा, ''कहने की ज़रूरत नहीं कि मेरे माँ-बाप बेचने के लिए तैयार हैं। मुझे ले जाइये।''

अम्बरीश शुनश्शेप को लेकर, कड़ी दुपहरी में लू का मारा, विश्वामित्र के आश्रम में पहुँचा। शुनश्शेप विश्वामित्र को देखते ही उनकी गोद में जा गिरा। उसने अपनी सारी कहानी सुनाई और प्रार्थना की कि उसकी रक्षा करें।

विश्वामित्र उसको देखकर पसीजे। उन्होंने अपने चारों लड़कों को देखकर कहा, ''तुम इसके बदले बलि के लिए जाओ और इसकी रक्षा करो।'' उन्होंने पिता की आज्ञा की परवाह नहीं की और जाने से इनकार कर दिया। विश्वामित्र को गुस्सा आ गया, उन्होंने उनको भी उसी तरह शाप दिया, जिस तरह वसिष्ठ के लड़कों को दिया था।

फिर विश्वामित्र ने शुनश्शेप को दो मन्त्र उपदेश में दिये, ''जब तुम्हें बलि के लिए स्तम्भ से बाँध दें, तब तुम ये मन्त्र पढ़ना। अग्नि देवता प्रत्यक्ष होंगे।''

हुआ भी ऐसा ही। यज्ञ में शुनश्शेप पर लाल चन्दन पोता गया। उसे लाल कपड़े पहनाये गये। दूब से उसे नीम के स्तम्भ से बाँध दिया। तब उसने मन में दो मन्त्र जपे। इन्द्र ने उसको दीर्घायु दी।

सच्चा मानव

बात बहुत पुरानी है। कल्पक राज्य पर राजा कदंबसेन शासन करता था। कदंबसेन अत्यंत योग्य व्यक्ति था। देश समृद्ध था। जनता सभ्य और शांतिप्रिय थी। इस कारण अन्य देशों के राजा कल्पक राज्य की उन्नति पर जलते हुए भी कदंबसेन के नाम से डरते थे।

उन्हीं दिनों में राजा कदंबसेन के अंगरक्षक का देहांत हो गया। इस पर पड़ोसी राज्यों में यह ख़बर फैल गई कि कोई समर्थ और विश्वासपात्र व्यक्ति मिल जाये तो राजा उसे अपना अंगरक्षक नियुक्त करेगा। इसलिए उस पद को पाने के लिए कई व्यक्ति कल्पक राज्य में आ पहुँचे और राज्य की सीमा पर स्थित सराय में ठहर गये।

उन व्यक्तियों में दण्डपाणि और धूमकेतु नामक युवक अंगरक्षक के पद के लिए योग्य प्रतीत हुए। उन दोनों युवकों में भी दण्डपाणि अत्यंत तेज, शक्तिशाली और साहसी था।

धूमकेतु ने भाँप लिया कि दण्डपाणि सब प्रकार से उसकी अपेक्षा अधिक योग्य है, इसलिए राजा का अंगरक्षक बनने का मौक़ा उसे हाथ न लगेगा। इस कारण उसने दण्डपाणि को हटाने के लिए सोच-समझकर एक उपाय किया।

उसने दण्डपाणि से कहा, ''दोस्त! इस नगर में मेरे जान-पहचानवाले अधिक संख्या में हैं। मैं उन लोगों से मिलकर दो-चार दिनों में लौट आऊँगा। लेकिन इस बीच मेरी खोज में मेरे घर से कोई आवे तो उन्हें मेरे कुशल-क्षेम बताकर उनके हाथ कृपया यह चिट्ठी दे दो।'' इन शब्दों के साथ उसने दण्डपाणि के हाथ में एक चिट्ठी दी।

इसके बाद धूमकेतु सीधे राजमहल में गया। राजा से मिलकर निवेदन किया- ''महाराज, मैं आप को सावधान करने आया हूँ। आप के राज्य की पूर्वी सीमा पर स्थित सराय में एक विदेशी

गुप्तचर पहुँच गया है, उसका नाम दण्डपाणि है। वह आपका अंगरक्षक बनने की कोशिश में है। आपको केवल मेरी बात पर यक़ीन करने की ज़रूरत नहीं; मेरे कहे मुताबिक़ करेंगे तो आपको स्वयं सचाई मालूम हो जायेगी। इसके बाद आप जो उचित समझें, वह निर्णय ले सकते हैं।'' इन शब्दों के साथ धूमकेतु ने राजा को कोई उपाय बताया।

राजा कदंबसेन ने रात को अपने सैनिकों को भेजकर सराय के चारों तरफ़ पहरा बिठा दिया। थोड़ी देर में एक अश्वारोही सराय में प्रवेश करके दण्डपाणि से मिला और धूमकेतु के बारे में दरियाफ़्त किया।

दण्डपाणि ने धूमकेतु द्वारा दी गई चिट्ठी उस अश्वारोही को दे दी। दूसरे ही क्षण सैनिकों ने वह चिट्ठी ले ली और दण्डपाणि को घेर लिया। मौक़ा पाकर अश्वारोही सराय से अपने घोड़े पर भाग गया। वह धूमकेतु द्वारा नियुक्त किया गया था।

सैनिक चिट्ठी के साथ दण्डपाणि को भी राजा के पास ले गये।

उस चिट्ठी में गुप्त लिपि में लिखा हुआ था कि दण्डपाणि सकुशल वहाँ पहुँच गया है। राजा के अंगरक्षक का पद उसे मिलने की संभावना है। हो सके तो और अनेक समाचारों का शीघ्र ही संग्रह करके भेज देगा।

राजा कदंबसेन को अब स्पष्ट मालूम हो गया कि दण्डपाणि शत्रु राजा का गुप्तचर है। इस पर नाराज़ हो राजा ने उसे आजीवन कारागार की सजा सुनाई। दण्डपाणि को कारागार में डाल दिया

गया। तब जाकर उसे मालूम हुआ कि धूमकेतु ने उसके साथ कैसा दगा किया है?

इसके बाद राजा कदंबसेन ने धूमकेतु की सहायता की प्रशंसा की और उसी क्षण उसे अपना अंगरक्षक नियुक्त किया।

थोड़े दिन बीत गये। एक दिन धूमकेतु राजा के गुप्त कक्ष में पहुँचा। राजा के पार्श्व में एक पात्र में पीने का पदार्थ था। राजा से वार्तालाप करते हुए धूमकेतु ने बड़ी चालाकी से अपनी अंगूठी में छिपाये गये चूर्ण को पात्र में डाल दिया।

इसके थोड़ी देर बाद राजा उस पात्र को उठाकर पीने को हुआ, तभी अचानक कहीं से दण्डपाणि आ धमका और राजा के हाथ से पात्र को खींचते हुए बोला, ''महाराज, उसमें ज़हर मिला हुआ है। आप कृपया न पीजियेगा।''

''ज़हर? किसने मिलाया है?'' राजा ने आश्चर्यपूर्वक पूछा।

''और कौन है? आपके अंगरक्षक ने ही। चाहे तो उसकी अंगूठी की जांच कर लीजिये।'' दण्डपाणि ने बताया।

परीक्षा करने पर यह साबित हुआ कि पात्र में ज़हर मिलाया गया है। राजा ने उसी वक़्त धूमकेतु को मृत्यु दण्ड की सजा सुनाई। सैनिक धूमकेतु को वहाँ से ले गये, तब राजा ने दण्डपाणि से पूछा, ''तुम कारागार से कैसे बचकर निकल आये? तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ कि धूमकेतु मुझे ज़हर देनेवाला है? क्या तुम विदेशी गुप्तचर नहीं हो?''

''महाराज! मैं कारागार से बचकर निकल आया हूँ। मैं शत्रु राजा का गुप्तचर हूँ। धूमकेतु

को आपको ज़हर देने की प्रेरणा भी मैंने ही दी है।'' दण्डपाणि ने कहा।

राजा विस्मय में आकर बोला-''यह सब मुझे कुछ विचित्र-सा मालूम हो रहा है। तुम मुझे मार डालना चाहते थे तो फिर बचाया ही क्यों?''

दण्डपाणि ने कहा, ''महाराज! सारी बातें मैं साफ़-साफ़ बता रहा हूँ। सुनिये! राज्य का लोभी कलिंग राजा ने आपका वध करने के लिए मुझे भेजा है। मैं आपके यहाँ अंगरक्षक का पद पाने के लिए आया हूँ। मगर आप का राज्य तथा आप की शासन-व्यवस्था को देख मैं मुग्ध हो गया। तब मुझे लगा कि ऐसे अच्छे राज्य को मेरे राजा को दिलाने से बढ़कर दूसरा अन्याय कोई न होगा। मैंने अपने राज्य को वापस लौटने का निश्चय किया। इस बीच धूमकेतु ने एक छोटी-सी नौकरी के वास्ते मेरे साथ दगा किया। ऐसा व्यक्ति भविष्य में किसी बड़े प्रलोभन में आकर आपके प्राणों के लिए ख़तरा पैदा कर सकता है। इसे साबित करने के लिए मैंने यह नाटक रचा। मैंने ऐसा अभिनय किया कि मैं धूमकेतु का हितैषी बन गया हूँ। उसी की मदद से मैं कारागार से मुक्त हुआ। मैंने उसे इस बात के लिए उकसाया कि वह आप पर विष का प्रयोग करके अपने पतन का गड्ढा स्वयं खोद ले। मेरा प्रयत्न सफल हो गया। यदि मेरे इस व्यवहार में कोई दोष हो तो आप मुझे उचित दण्ड दीजिये।''

दण्डपाणि के इस कथन से राजा ने भली भाँति समझ लिया कि वह एक ईमानदार व्यक्ति है। राजा ने उसे गले लगा कर कहा, ''मैं आज से तुम को अपना अंगरक्षक ही नहीं, बल्कि अंतरंग सलाहकार भी नियुक्त कर रहा हूँ।''

इस पर दण्डपाणि ने सविनय निवेदन किया, ''महाराज, क्षमा कीजिए! मैं आप के यहाँ इस पद को प्राप्त कर कलिंग राजा के प्रति विश्वास-घात नहीं कर सकता। मैं जिस काम से आया था, उसे पूरा न कर पाया, इस वजह से मैं पुनः कलिंग राजा के यहाँ जा नहीं सकता। किसी और देश में जाकर अपनी जीविका का कोई नया मार्ग ढूँढ लूँगा।'' यों कहकर दण्डपाणि वहाँ से चला गया।

मुझे याद है जब राजा को राजधानी से बाहर रहना पड़ा तब तुमने उनकी कितनी सहायता की।

बड़े आनन्द में हमलोगों का समय बीता। मुझे ज्यादा कुछ नहीं करना पड़ा। अरुणा ने राजा की अच्छी तरह देखभाल की। हम दोनों अभी भी राजा के साथ हैं। राज्याभिषेक कब है महानुभाव?

आप बताइये महानुभाव, कि आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?

मैं चाहता हूँ कि तुम उनकी बस्ती में जाओ और उनकी योजना का विस्तृत विवरण जानने की कोशिश करो...

मैं आज ही जाऊँगा, महानुभाव। बस्ती ज्यादा दूर नहीं है, सीमान्त पर ही है।

मैं समझता हूँ महानुभाव। और आखिर मैं तो एक दिन के लिए ही बाहर रहूँगा। मैं कल लौटने पर सीधा आप के पास ही आऊँगा।

अब जाओ, लेकिन सावधान रहना।

दो दिनों के बाद... अरुणा आदित्य के निवास स्थान पर आती है।

क्या मैं आ सकती हूँ, आदित्य?

अरुणा, आ जाओ। क्या बात है?

राम सिंह दिखाई नहीं देता। क्या उसे कहीं भेजा है? क्या कुछ मालूम है कि कब आयेगा?

इतनी जल्दी क्या थी? तुम घबराये लग रहे हो?
मैंने उसे आदिवासियों की बस्ती में भेजा है। वह आता ही होगा।

ऐसा लगता है कुछ आदिवासी राज्याभिषेक में गड़बड़ी पैदा करने की योजना बना रहे हैं। मैंने राम सिंह को विस्तृत विवरण की जानकारी के लिए भेजा है।
राजा ने राजगुरु की सलाह के बारे में मुझे बता दिया है। कोई खतरा मत लो।

मैं जानती हूँ, तुम अपनी रक्षा स्वयं कर सकते हो, फिर भी, राजगुरु की सलाह मानना अच्छा होगा। मैं केवल यही चाहती हूँ कि राम सिंह को कुछ न हो। मैं राजा को बता दूँगी।
धन्यवाद अरुणा। मैं भी उनसे मिल लूँगा। अलविदा।

एक अंगरक्षक अरुणा के जाने तक प्रतीक्षा करता है...
महानुभाव, एक आदिवासी दम्पति आप से मिलना चाहते हैं।
उन्हें अन्दर ले जाओ।

दम्पति को अन्दर लाया जाता है।
अन्दर आ जाओ। आज मेरे लिए क्या खबर लाये हो? आशा है, बस्ती के लोगों की कोई समस्या नहीं है।

नहीं महानुभाव, बस्ती में कोई समस्या नहीं है। सब शान्तिपूर्वक रह रहे हैं। लेकिन...
... लेकिन हमने सुना है कि हमारे कुछ आदमियों ने महल के किसी आदमी को पकड़ रखा है।

वह कौन है? क्या तुम उसे जानते हो? उसे तुमने कहाँ देखा है।

महल का कोई आदमी? राम सिंह हो सकता है। तुरन्त कुछ करना होगा।

नहीं महोदय, हमने नहीं देखा है। लेकिन अपने कुछ दोस्तों को यह कहते हुए सुना है कि उन्होंने एक बूढ़े आदमी को आँख पर पट्टी बाँधकर ले जाते हुए देखा है।
उन लोगों को उस पर जासूसी का सन्देह है और उसे वे फाँसी देना चाहते हैं।

हमलोग जल्दी से यह खबर आप को देने आ गये। हमलोगों ने सोचा कि शायद उसे आप जानते हों क्योंकि वह महल का आदमी है।

खबर देने के लिए धन्यवाद। यदि हालत बिगड़ने की खबर मिले तो मुझे फिर आकर बता देना।
निश्चित रूप से हमलोग आकर बता देंगे।
आदिवासी दम्पति के जाते ही आदित्य अपने व्यक्तिगत अंगरक्षक को बुलाता है।

जब अंगरक्षक आ जाता है...
मेरे लिए एक घोड़ा तैयार रखो और बाहर मेरा इन्तजार करो। कुछ रस्सी रखो। और किसी को कुछ मत बताओ।
क्रमशः

भारत की सांस्कृतिक घटनाएँ

वसन्त-आगमन

राजस्थान में उदयपुर की स्त्रियाँ वसन्त आगमन पर **मेवाड़ पर्वोत्सव** की बड़ी उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा करती हैं। वे बड़े चटकीले रंगों के वस्त्र धारण कर गंगौड़ में एकत्र होती हैं जहाँ वे इसर (ईश्वर) और गौरी (पार्वती) की प्रतिमाओं को वस्त्र पहनाती हैं और फिर समारोह पूर्वक शोभा यात्रा के साथ पिछौला झील के गंगौड़ घाट पर उन्हें ले जाती हैं। तब प्रतिमाओं को नौकाओं की शोभा यात्रा में ले जाया जाता है, जो बड़ा ही आकर्षक दृश्य होता है। इस अवसर पर भजन, नृत्य तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम किये जाते हैं। अन्त में आतिशबाजी के साथ कार्यक्रम समाप्त हो जाता है।

पंजाब में वसन्त आगमन का सूचक है **बैसाखी** जो फसलों का पर्वोत्सव है। यह बैसाख महीने के प्रथम दिवस पर १३ अप्रैल को आता है। स्त्री-पुरुष जोशीले भांगड़ा नृत्य की मस्ती में डूब जाते हैं।

बैसाखी उत्तर भारत के अनेक भागों में **नव वर्ष** के रूप में भी मनाते हैं जो १४ अप्रैल को आरम्भ होता है। पश्चिम बंगाल में लोग विधि के अनुसार स्नान करते हैं और अपने घरों को रंगोली से सजाते हैं। आसाम में **रंगाली बीहू** अथवा वसन्त पर्वोत्सव चैत्र के अन्त में और नये वर्ष के आगमन पर मनाया जाता है। प्रथम दिन, गारु बीहू को मवेशियों को स्नान कराया जाता है और हल्दी से सजाया जाता है। दूसरे दिन मानुष बीहू मनाया जाता है, जब, पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे नये वस्त्र धारण करते हैं, विशिष्ट पकवान खाते हैं और दान करते हैं।

केरल में वसन्त आगमन को **विशु** के रूप में मनाते हैं जो नव वर्ष का आरम्भ होता है। मेडम महीना १४ अप्रैल को शुरू होता है। इसी दिन को तमिलनाडु में भी नया वर्ष आरम्भ होता है, जब सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है।

आप के पन्ने आप के पन्ने

तुम्हारे लिए विज्ञान

फोनॉ:टोग्राफ से टेलिफोन तक

टेलिफोन के आविष्कारक अलेक्जेंडर ग्राहम बेल ने अपनी जिन्दगी की शुरुआत वाणी सुधारक के रूप में की थी। वह हमेशा कोई एक ऐसे उपाय के बारे में सोचता रहता था कि कैसे उसके बहरे विद्यार्थी बोल पाने में समर्थ हों। इसके लिए उसे मानव कान की बनावट तथा कार्यविधि का विस्तारपूर्वक वैज्ञानिक अध्ययन करना पड़ा। सन् १८७४ में उसने फोनॉ:टोग्राफ का आविष्कार किया जो मनुष्य की आवाज की तरंगों को चित्रित करनेवाला एक उपकरण था। उसके मन में आवाज को बिजली की तरंगों द्वारा पहुँचाने का विचार आया। उसने इस योजना पर एक अनुभवी बिजली मिस्त्री थॉमस वाटसन के साथ काम किया। दो वर्षों के अथक परिश्रम के बाद सन् १८७६ में वाटसन बेल के सोने के कमरे में अपने कान के पास रिसिवर लिए खड़ा हो गया और ग्राहम बेल से, जो बरामदे से नीचे प्रयोगशाला में था, बोला। दूसरी ओर से बेल की स्पष्ट आवाज सुनकर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। बेल ने कहा, ''मि.वाटसन, कृपया यहाँ आइये। मैं आप से मिलना चाहता हूँ।'' यह टेलिफोन पर हुई सबसे पहली बातचीत थी।

तुम्हारा प्रतिवेश

मछलियों का आवास...

हाल के वर्षों में, यूरोप के अनेक समुद्रों में तथा भूमध्य सागरीय तटों में समुद्री आवासों को क्षति पहुँची है। शोध कर्ताओं के अनुसार ऐसा एक विशेष प्रकार के शैवाल-कॉलेप्रा टैक्सिफोलिया के कारण हुआ है।

टैक्सिफोलिया अपने आस-पास की वनस्पति और प्राणिजगत की विविधताओं को नष्ट कर देता है। यह अरुचिकर और विषैला होता है। इस प्रकार यह मछलियों को नये आवास की खोज करने पर मजबूर कर देता है।

हाल तक टैक्सिफोलिया मछलीघरों की सजावट के लिए अलंकार की तरह बेचा जाता था, क्योंकि देखने में यह आकर्षक लगता है। यद्यपि इस किस्म को भिन्न नस्ल का माना जाता है, फिर भी इसमें नस्ल के कुछ विनाशकारी तत्व हैं। इसलिए मछलीघरों में प्रयोग के लिए इसकी बिक्री पर अमेरिका में सन १९९९ में प्रतिबन्ध लगा दिया गया।

आप के पन्ने आप के पन्ने

क्या तुम जानते थे?

प्राकृतिक रंग

स्वादिष्ठ से स्वादिष्ठ भोजन भी रंग की एक झलक के बिना आकर्षक नहीं दिखाई देता। यद्यपि बाजार में कृत्रिम रंगों के बहुत से माध्यम मौजूद हैं, फिर भी हम लोग काफी मात्रा में आज भी प्राकृतिक रंगों का प्रयोग करते हैं।

एक ऐसा ही भोजन का प्राकृतिक रंग किरमिज भृंग से बनाया जाता है। यह प्राणी मध्य अमेरिका और आस्ट्रेलिया के रेगिस्तानों में भारी संख्या में पाया जाता है। स्थानीय निवासी इसे इकट्ठा कर पीसते, सुखाते और महीन चूर्ण बनाते हैं। तब सुर्ख लाल रंग बनाने के लिए चूर्ण को निश्चित अनुपात में पानी में मिलाते हैं। अनुमान के अनुसार एक किलो रंग बनाने के लिए डेढ़ लाख भृंगों की आवश्यकता होती है। इस रंग का प्रयोग केक आइसिंग तथा अन्य मिठाइयों में किया जाता है।

अपने भारत को जानो

हमारे प्रधान मंत्री और वित्त मंत्री

१. किस प्रधान मंत्री ने सर्वप्रथम अपनी सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव का सामना किया? प्रस्ताव किसने प्रस्तुत किया?

२. किस प्रधान मंत्री ने अविश्वास प्रस्ताव में हार जाने के बाद त्यागपत्र दे दिया? किस वर्ष में?

३. भारत के गणतंत्र होने के बाद किसने प्रथम केन्द्रीय बजट पेश किया?

४. सबसे लम्बी अवधि तक किसने वित्त मंत्री का पद संभाला?

५. स्वतंत्र भारत का पहला वित्त मंत्री कौन था?

६. भारत का सर्वप्रथम बजट किसने प्रस्तुत किया?

(उत्तर ६६ पृष्ठ पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

SOURAA

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

A. SEETHA DEVI

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,

प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

कु.नेहा यादव
द्वारा, श्री प्रदीप कुमार यादव
१०२, राइट गंज,
गाजियाबाद,
(उत्तर प्रदेश)

विजयी प्रविष्टि

देना थोड़ा मुझे भी,
थोड़ा खाने दो अभी।

'अपने भारत को जानो' प्रश्नोत्तरी के उत्तर :

१. जवाहरलाल नेहरू; आचार्य कृपलानी।
२. वी.पी.सिंह; १९९०।
३. जॉन मथाई।
४. मोरारजी देसाई।
५. आर.के.शणमुखम चेट्टी।
६. सर जेम्स विलसन (स्वतंत्रता से पूर्व)।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor: B. Viswanatha Reddi (Viswam)
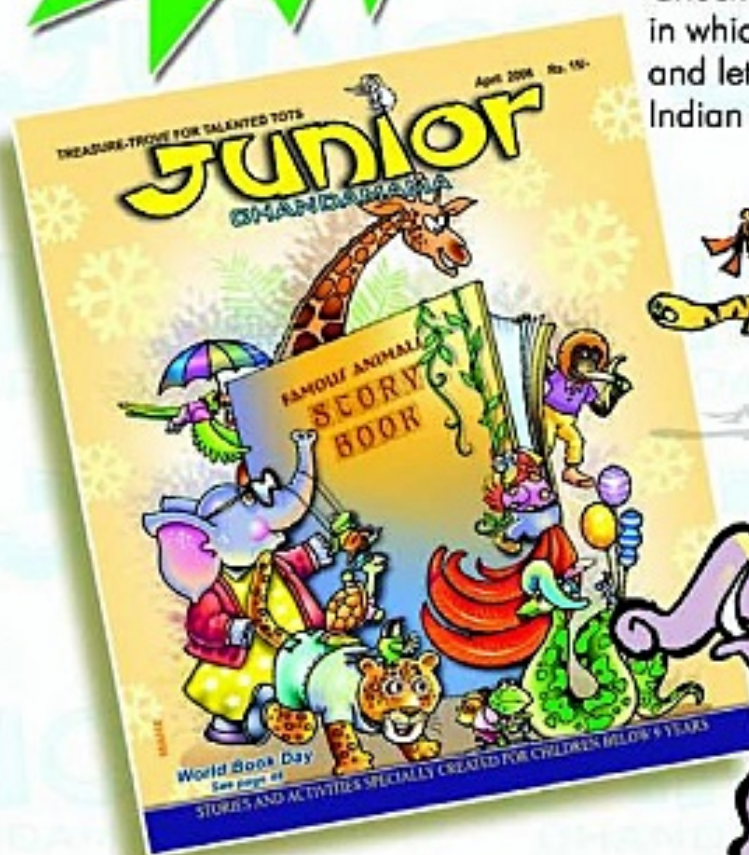
A TREASURE-TROVE FOR TALENTED TOTS

PAY ONLY RS.150 FOR ANNUAL SUBSCRIPTION AND SAVE RS.30

chandamama (Hindi) APRIL 2006
Regd. with Registrar of Newspaper for India No. 1087/57
Regd No. TN/CC(S)Dn/163/06-08
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/06-08, Foreign No. 93/06-08